1

श्री गणेश वन्दना

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

एक दन्त दयावंत, चार भुजा धारी।

माथे पर तिलक सोहे, मुसे की सवारी॥

पान चढ़े फुल चढ़े, और चढ़े मेवा।

लड्डुवन का भोग लगे, संत करे सेवा॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

ंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।

बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥

सुर श्याम शरण आये, सफल किजे सेवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

व्रकतुंड महाकाय, सूर्यकोटी समप्रभाः।

निर्वघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

जै माता की

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

1979 लाजवन्ती मां काठमाण्डु

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

तेरे हैं।।। मां तेरे हैं ।।।

तेरे नूरों में मैया खो गये आके

तेरे हो गये मैया भवना में आके

मेरी मां ।।। तेरे हैं ।।।

तेरे हैं तेरे मैया–तेरे रहेंगे

चरणों में तेरे मां पड़े हम रहेगें

दीदार तेरे मैया करते रहेंगे

(अरी) आए हैं।।। मेरी मां ।।। आए हैं

तेरे मां ।।। दिदार मां ।।।

पाएगें तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

आए हैं आए मैया तेरी शरण में

रख लीजो आए मैया तेरी शरण में

रख लीजो भैया आप अपनी शरण में

रख लीजो।।। लाज आज मां।।। मेरी मां।।।

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेगें

लाज मां।।। मेरी मां।।। भोली मां।।।

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

जयपुर से आई मैया अपने भवन में

सुन्दर रुप मैया लाई भवन में

जगराते रात मैया आई भवन में

आई मां।।। मेरी मां।।। सबकी मां।।।

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

तेरे भवन में तेरे गुणगान करेंगे

भवना वाली मां दिल्ली वाली मां

जयपुर वाली मां आने वाली मां

तूने कहा जो सच होना है मां

तेरा भवन।। परमधाम।।। बनेगा मां

भवना वाली मां दिल्ली वाली मां

जयपुर वाली मां आने वाली मां

तूने कहा जो सच होगा भवन मां

तेरा भवन।। परमधाम।।। बनेगा मां

तेरे है।।। तेरे हैं।। तेरे – रहेंगे

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

बच्चों के सन्मुख बैठी माता भवन में

लालों को दर्शन दे रही मैया भवन में

भवना मां।।। दिल्ली मां।।। सलोनी मां।।

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

तु ही संभाले मैया तू ही तो पाले

जीवन की नैया मैया तेरे हवाले

तेरे हैं।।। तेरे हैं।। मां ।। तेरे हैं।।

तू ही शक्ति मैया तू ही भक्ति

तू ही संकट हरनी तू ही वरदानी

संकट मां।।। हरना मां।।। मेरी मां

तेरे हैं तेरे मैया – तेरे रहेंगे

3

जै माता की

जय श्री कृष्ण

भाई श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार से

कन्हैया........

कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है
जिधर तुम छुपे हो उधर देखना है

विदुर मिलनी के जो घर तुमने देखे
तो तुम को हमारा भी घर देखना है
जो उस सांवरे को सदा ढूंढता है
उसे एक दिन सांवरा ढूंढता है
जिसे ढूंढने का अमल पड़ चुका है
को इस ढूंढने में मजा ढूंढता है

अगर तुम दीनों की हो आहो आशिक
तो हमें उन आहों का असर देखना है
उबारा था जिस कर गीद ओर कच्छ को
हमें उन हाथों का हुनर देखना है
राधे राधे गोविन्द गोविन्द राधे
राधे गोविन्दा – राधे गोविन्दा
कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है
जिधर तुम छिपे हो उधर देखना है

विदुर भीलनी के जो घर तुमने देखे
तो तुम को हमारा भी घर देखना है

अगर तुम दीनो की हो आहो के आशिक
तम हमें उन आहों का असर देखना है
उबारा था जिस कर गीद और कच्छ को
हमें उन हाथों का हुनर देखना है
कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है
जिधर तुम छिपे हो उधर देखना है

जो उसे उस सांबरे के सदा ढुंढता है
उसे एक दिन सांवरा ढुंढता है
जिन नैनो से नीर बहा करता है
उन नैनो में श्याम रहा करता है
कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है
जिधर तुम छिपे हो उधर देखना है

4

जै माता की

जै नंदी देवा

जै नन्दी देवा बोलो जै नन्दी देवा – बोलो जै नन्दी देवा
भोले की असवारी, बाबा असवारी जै नन्दी देवा – बोलो जै नन्दी देवा

गले में घंटी बाजे, भोले को रिझावे – नंदी भोले को मनावे
गणों में सबसे आगे मैया जी को प्यारे – बोलो जै नन्दी देवा बोलो जै नन्दी देवा

शिव परिवार जलहरी नन्दी वाहिर नन्दी जी बैठे वाहिर नन्दी जी
नन्दी जी को सुनाले आज अपनी सुनाले
आज जो सुनले नंदी बाबा सुनते भी बोलो जै नन्दी देवा, बोलो जै नन्दी देवा

भोले उरज वो सुनते, कान तुम्हारे जावे – जो कान तुम्हारे जावे
कृपा तुम्हरी जो होवे भोले प्रसन्न होते जै नंदी देवा बोलो जै नंदी देवा

बिन आज्ञा तुम्हारी भोले दर्शन भारी जै नंदी देवा, बोलो जै नंदी देवा

नन्दी जी की आरती जो कोई जन गावे
नन्दी जो कोई जन गावें
भवसागर तर जाए भोले दर्शन पाए भवसागर तर जाए
मैया दर्शन पाए शरणों में रह जाए
जै नंदी देवा, बोलो जै नंदी देवा

5

जै माता की

हिंडोला कुंज बन डाला रे

हिंडोला कुंज बन डाला रे
डरो मत राधिका प्यारी है
है जो तुम प्राणों से प्यारी है
झूलन आई राधिका प्यारी
धीर झोटा देना बनवाई
हमें लागे डर बड़ो भारी रे

6

जै माता की

जब से देखा तुझे मुरली वाले

फल छोड़ जो चाहता है _ कृष्ण भी चाहता है उसको

दिखलता उसे छवि के जलवे

जिसका ये दिल कहा करता है हरे कृष्ण

कुछ मीठी सी बात कहा करता है

जिस नेनों से नीर बहा करता

उन नैनों में श्याम रहा करता है

जब से देखा तुझे मुरली वाले

दिल हमारा तो बस में नहीं है

अपने जलवों की मत पूछो हमसे

जलवा कोई भी कम तो नहीं है

रूप सजाते हो तुम नित नवेले

रूप तेरा दिवाना बनाय

जो सजाता है तुमको कन्हैया

वो भी आशिक तेरा कम तो नहीं है

कभी मड़ियों की बेली बनी है

कभी कलियों की सुहानी सजी है

लट मस्ती में अधरों को चूमे

उसकी किस्मत सी किस्मत नहीं है

तेरे चितवन तेरी मस्त आंखें

बिन पिये ही नशा चढ़ गया है

दिल को कैसे समझायें कन्हैया

हम भी बहके तो कम नहीं हैं

7

जै माता की

राम जपो सिया राम जपो सिया राम जपो सियाराम ही राम राम

राम नाम का ले लो सहारा बेड़ा पार करे भोले नाथ

– जगमग जगमग मां की ज्योति
नवरातों में जगती है
ज्योंता वाली लाटा वाली
मेंहराँ ही मेंहराँ करती है
– भोले बाबा भोली मैया
जोड़ी जग में निराली है
बाबा मेरे औखड़ दानी
मां मेरी वरदानी है
– भवना वाली दिल्ली वाली
रूठी रूठी लगती है
मां को रिझाले मां को मना ले
मे ही सांची माई है
– भवना वाली दर्श दिखाओ
अर्ज हमारी सुनलो मां
तु ही शक्ति तु ही भक्ति
वाणी तेरी अमृत मां

8

जै माता की

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है
मेरा आपकी दया से – सब काम हो रहा है
करते हो तुम कन्हैया – मेरा नाम हो रहा है ....
पतवार के बिना ही
मेरी नाँव चल रही है
हैरान है जमाना ....
मंजिल भी मिल रही है
करता नहीं मैं कुछ भी – सब काम हो रहा है
तुम साथ हो जो मेरे
किस चीज़ की कमी है
तेरे साथ से गुलाब अब
मुलायम हो रहा है
किसी और चीज की अब
दरकार ही नहीं है
मैं तो नहीं हूँ काबिल
तेरा प्यार कैसे पाऊँ
टूटी हुई वाणी से
गुणगान कैसे गाऊँ
तेरी प्रेरणा से ही सब
ये कमाल हो रहा है

9

जै माता की

पवन चले मां देर हुई.......
विश्राम को मां प्रारम्भ करो
किसी शुभ घड़ी – हो – हो
किसी शुभ घड़ी का आवाहन करो
हम चरणों में शीश झुकाते हैं
योगमाया मां को बुलाते हैं
मैया गौरी गणेश मनावा री हम आ गये तेरे द्वारे
हम आ गये तेरे द्वारे मैया गौरी गणेश मनावे
हरा हरा गोबर अंगन लिपाया
हरा हरा गोबर अंगन लिपाया
मोतियन चौंक पुराने री हम आ गये तेरे द्वारे
हम आ गये तेरे द्वारे मैया गणपत गणेश मनावे
चन्दन चौंकी नहान संजोया
चन्दन चौंकी नहान संजोया
कोरे कोरे कलश भरावां री हम आ गये तेरे द्वारे
मैया गंगा जल भर लावां री हम आ गये तेरे द्वारे
सुआ सुआ चौला अंग विराजे
सुआ सुआ चौला मां के अंग विराजे
गोटा किनारी लगावां री हम आ गये तेरे द्वारे
सलमा सितारे जड़ावां री हम आ गये तेरे द्वारे
गोरी गोरी बहियां लाल चूड़ियां
गोरी गोरी बहियां मां की लाल चूड़ियां
हाथों मेंहदी लगावां री हम आ गये तेरे द्वारे

मंहदी दर्शन पावां री हम आ गये तेरे द्वारे

सिर सोने का छत्तर विराजे

माथे बिंदिया कानों झूमके साजे

हाथों में कंगन पग पायल बाजे

कमर में तगड़ी गल तोड़ा साजे

नाक में नथनी पहनावां री हम आ गये तेरे द्वारे

हरा हरा पीपल बाहर भवन के

हरा हरा पीपल बाहर भवन के

वन्दन वार सजावां री हम आ गये तेरे द्वारे

मैया भवन तेरा सजावां री हम आ गये तेरे द्वारे

खीर खांड सब रस मेवा

खीर खांड सब रस मेवा

हलुआ भोग लगावां दी हम आ गये तेरे द्वारे

चनों का भोग लगावां दी हम आ गये तेरे द्वारे

पान सुपारी ध्वजा नारियल

पान सुपारी ध्वजा नारियल

चरणों भेंट चढ़ावां री हम आ गये तेरे द्वारे

कंचन थाल कपूर की बाती

कंचन थाल कपूर की बाती

जगमग ज्योता जगावां री हम आ गये तेरे द्वारे

मैया की ज्योता जगावां री हम आ गये तेरे द्वारे

अंधे को अंखियां कोड़ी को काया

अन्धन को अंखियां कोड़ी को काया

वाछन लाल खिलावा री हम आ गये तेरे द्वारे

निर्धन धन दिलवावा री हम आ गये तेरे द्वारे

ध्यानू भगत तेरो यश गावे

दुर्गा मंडल तेरो गुण गावे

शरणी अपनी लगावां री हम आ गये तेरे द्वारे

सेवा अपनी लगावां री हम आ गये तेरे द्वारे

मैया गौरी गणेश मनावा री हम आ गये तेरे द्वारे

हम आ गये तेरे द्वारे मैया गणपत गणेश मनावे

ओ मैया आ गये तेरे द्वारे

ओ मैया आ गये तेरे द्वारे

10

जै माता की

दरबार में भवना वाली के चरण खिलाए जाते हैं

दरबार में भवना वाली के
चरण खिलाए जाते हैं
जो दर्शन पाऐं चरणां के
वो मां के दुलारे होते हैं
इन मंगल चरणों में रचना है
और रूचियां अनेक समाई हैं
ये रचना रूचियां हे.......
ये रचना रूचियां बाबा के
साथ सजाई जाती हैं
मां रचना रूचियां सजाती है
और लालों को पास बैठाती है
कुछ लाल गए
कुछ याद रहा कुछ भूल गये
कुछ लाल गए कुछ लाल रहे
वो आस लगाए बैठे हैं

11

जै माता की

पंचरंगा चौला 2

मैया पचरंग चौलिया वाली री, तेरी ज्योतां वारि वारि

मैया गल्ल फुल्लां दी माला री तेरी ज्योतां वारि वारि

तेरी ज्योतां वारि वारि औ मैया भवना वारि

तेरी राहवां वारि वारि री ओ मैया दिल्ली वारि

गुंध लाई मालन सेवरा मैया

गुंध लाई मालन सेवरा मैया

पहनो आध क्वारी री तेरी ज्योतां वारि वारि

तेरी राहवां वारि वारि री ओ मैया जयपुर वारी

मैया पचरंग चौलिया वारी री तेरी ज्योतां वारि वारि

गरूड़ चढ़े विष्णु आये मां

गरूड़ चढ़े विष्णु आये मां

बैल चढ़े भोलेनाथ री तेरी ज्योतां वारि वारि

तेरी राहवां वारि वारि री औ मैया कालका माई

मैया पचरंग चौलियां वारि री तेरी ज्योतां वारि वारि

सिंह चढ़ी मां आप हो आई

सिंह चढ़ी मां आप ही आई

बच्चों के काज संवारे री तेरी ज्योतां वारि वारि

तेरी राहवां वारि वारि री औ मैया कलकत्ते वारि

मैया पचरंग चौलियां वारि री तेरी ज्योतां वारि वारि

करां मजूरी मां करो दया

करां मजूरी मां करो दया

आवां तेरे देश री तेरी ज्योतां वारि वारि

तेरी राहवां वारि वारि औ मैया कांगड़े वारी

मैया पचरंग चौलियां वारी री तेरी ज्योतां वारि वारि

मैया नहाँ–2 जान्दे यात्रु राज माँ

मुख बोलन जै–2 कार, जै–2 कार लाँटावालिये

करे जो जैकार तिहारी री तेरी ज्योतां वारि वारि

तेरी राहवां वारी वारी री ओ मैया वैष्णो वारि

मैया पचरंग चौलियां वारि री तेरी ज्योतां वारि वारि

मैया आप तो बैठी भवन में राज माँ

तेरे बच्चे बैठे हैं परदेश, परदेश लाँटावालिये

जिन रावाँ बड़ी अम्मा आवे

उन रावाँ मै तो वारि–2 जावाँ

मैया जे तू पार लगावना राज माँ

दाती भेज दो लौकर वीर, लौकर वीर लाँटावालिये

जिन रावाँ ज्वाला मैया आवे

उन रावाँ मै तो वारि–2 जावाँ

मैया सिमर चरण तेरा ध्यानु जस गावे राज माँ

मैया जो ध्यावे सोई वो फल पावे राज माँ

मैया हरो भक्तन की पीर, हरो पीर लाँटावालिये

जिन रावाँ मैया बाबा आवें

उन रावाँ मै तो वारि–2 जावाँ

12

जै माता की

तेरे दीदारों में खोयेंगे मैया
बतियों का पालन करेंगे री मैया
तू ही तो हमारी जीवन खिवइयां
जीवन की नैया है मैया हमारी
लेके बैठी है पतवार हमारी
पार जगारती किनारे मैया
तेरे हैं तेरे है तेरे हैं मैया
तेरे रहेंगे दिवाने रहेंगे
तेरी चरणों में मां पड़े हम रहेंगे
रज रज के चरणों दीदारा करेंगे
चरण धोएगें मन मैल धुलेंगे

मेरे लालो मैं यही रहती
हमेशा साथ हूँ तुम्हारे
मेरा भवन बनेगा परमधाम तुम देखो
जो मैया ने कहा वो सच होगा लालों मेरे

13

जै माता की

स्वागतम मैया सुस्वागतम मैया

स्वागतम मैया सुस्वागतम मैया
सुस्वागतम मैया शरणागतम मैया
दुःख हरणी सुख करणी मैया
मंगल करणी मैया
स्वागतम मैया सुस्वागतम मैया
कही बनी पटियाले वाली कहीं कलकत्ते वाली
सब रूपों में दर्शन दे रही है मैया भवना वाली
स्वागतम मैया सुस्वागतम मैया
लाल तेरे मां भवना में आए करे तेरा गुणगान
तुम्हें बुलाने तुम्हें रिझाने दर्शन दे दो मैया
स्वागतम मैया सुस्वागतम मैया
बरसाने मां साथ ले आई छप्पन भोग लगाए
सबको अपने रंग में रंगकर राधे आप समाई
स्वागतम मैया सुस्वागतम मैया
कलयुग में अवतार लिया
मां भवना वाली कहलाई
नई बस्ती में भवन बनाया
नौवा चरण खिलाए
स्वागतम मैया सुस्वागतम मैया

14

जै माता की

मैया जी तुमसे नाता न छूटे
दिल की लगी मेरी लगन न छूटे

1. नौराते मनाए मां को रिझाए
   मां दिल्ली वाली को भवन बुलाए
2. भवना वाली बनी मां ममता माई बनी मां
   अपने रूपों के दर्श कराऐ
3. दिल्ली वाली मैया से अरदास लगाऐ
   सब रूपों को मां साथ में लाए
   खीर भवानी बनी अम्बे रानी बनी
   जगदम्बे बनी लौहरां वाली बनी मां
4. भवना वाली बनी जयपुर वाली मां
   कालका माई बनी चामुण्डा माई बनी मां
5. शेरां वाली बनी मेहरा वाली मां
   लन्दन वाली जर्मन वाली मां
6. पटियाले वाली बनी मां जम्मु वाली मां
   भद्रकाली बनी कृष्ण काली बनी मां
7. कौमारी बनी मां अम्मा रानी बनी मां
   मनसा माई बनी अन्नपूर्णा बनी मां
8. मां के रूपों का ध्यान लगाए
   सब रूपों भवना बुलाए
9. भवना में आओ मां दर्श दिखाओ
   मां अपनी वाणी हमको सुनाओ

10. तेरे बिना मां ये नौराते सूने
हम को बता तुम को कहां हम ढूंढें
11. अनेकों दर्श मां तुमने दिये हैं
लीली दिखाई मन मोह लिये हैं
12. राधे बनी राधे ने समाई
तूने ये लीला कैसी दिखाई
13. बरसाने गई मां साथ में ले गई
कैसी ये लीला अजब दिखाई
लाली तेरे समझ न आई
साथ न आई वहीं ये बस गई
जै जै अम्बे महारानी की
जै जै अम्बे भवना वाली की
मां शक्ति दो कथा सुनाने की
जै जै अम्बे दिल्ली वाली की
मां तुम क्यों अन्तर ध्यान हुईं
इसका हमको मां ज्ञान नहीं
मां दिल्ली वाली भवन में आ जाओ
अपनी वाणी में कथा सुना जाओ
अपने जागे को पूर्ण करा जाओ
हम बच्चों की मां आश पुजा जाओ
जै जै अम्बे महारानी की
जै जै अम्बे दिल्ली वाली की
जै जै अम्बे तारा रानी की
मैया बरसाने से आ जइयो
बुलाए रे लाल लाली
जब तेरा भवना

रंग होवे मां

अपना रंग दिखा जइयो

बुलाए रे लाला

अब दर्शन दे जइयो

मैया मोहिनी रूप

दिखा जइयो

मैया बरसाने से आ गई है

मेरी मैया भवना वाली

मेरी मैया दिल्ली वाली मैया भवना वाली, मैया दिल्ली वाली

15

जय माता की

तारा रानी की कथा

मैया जी तुमसे नाता न टूटे, दिल की लगी मेरी लगन न छूटे
प्यार भरा ये नाता न टूटे, दिल की लगी मेरी लगन न छूटे
किन तेरा मां जगत रचाया, कौन आवे मैया आधी–आधी रात में
एकमन तेरा मां जगत रचाया, तारा रानी मैया आवे आधी–आधी रात में
विधी जान **रुक्मण** तारा रानी से, लाल पीले केसर रंग लिये **रुक्मण**
बांट इल भक्तों में **रुक्मण** पहुंची, तारा रानी जिस महल में रहती
तारा रानी डल से वादा किया वहाँ, आऊँगी रुक्मण जागे में तेरे
जाओ **रुक्मण** जगत रचायो, मैया की सेवा में ध्यान लगाओ
हरिश्चन्द्र राजा जान गया सब, जाऐंगी रानी डोम के घर में
सिर गोद में रानी के रख लिया राजा, सोने का नाटक कर रहा राजा
तारा ने मां का ध्यान किया तब, सोया राजा गहरी नींद वहां पर
मां की कृपा से नज़ारा ये रोया, रानी उठी छोड़ राजा को सोया
लेके डलों को तारा महल से चल दी, आधी रैन अपारा दूजे घटा घनी थी
राह में दो चोर मिले तारा को, घबरा के दौड़ पड़ी थी वंश वो
फट गया आंचला तारा जो दौड़ी पांव के पइये दौड़ जागे में पहुंची
मां का भजन कीर्तन होता जागे, तारा आने से जैकार कहां गुंजे
राजा की जब आंख खुली महल में, क्रोधित हुआ काढ़ी खडग राजा ने
रानी को देखन दौड़ पड़ा था, राह में चोरों से पाला पड़ा था
दोनों पऊंये आंचल ले राजा आगे बढ़ा था, पहुंचा डोम घर जागा जहां होता
सुन्दर बेटा राजा उसका जगन रचा
नीला घोड़ा तेरा उसका हवन रचा
खडग काड़ राजा ने बेटा काट दिया

घुड़साल जा राजा ने घोड़ा काट दिया मां हमारी
देंगो तले लकड़ियां लगी ज्वाला प्रगट हुई
तुरत भयो प्रसाद बांटे तैयारी हो गई
इक इक डली राजा ज्यों ज्यों खाँवदा
नयन भर भर के राजा वहां रोवदाँ मां हमारी
रानी पूछे राजा अब क्यों रोवदां
पंथ खण्डे धार मैंने आंखदां
राजा बोला रानी बेटा चाहिये
राजा बोला रानी घोड़ा चाहिये मां हमारी
तारा बोली राजा मां ध्यान करो
सुन्दर बेटा महल में जाकर देख लो
नीला घोड़ा घुड़साल में देख लो
राजा हुआ प्रसन्न हथ जोड़े खड़ा
रानी बोली मां के यश का तिलक लगा मां हमारी
मां की शक्ति भक्ति भक्तों न्यारी है
मां भवना वाली मां दिल्ली वाली प्यारी है
बच्चों की लाज बचाने भवना आई है
अपने जागे आकर कथा सुनाई है मां हमारी
तुझको शीश झुकाए मेहरां वाली मां
तेरे चरणों रहे सदा हमरी भोली मां
तेरी शरणी रहे सदा हमरी भोली मां मां हमारी
प्यारी मां

16

जै माता की

बरसाना राधे रानी का महल

तुम्हारी बात करते हैं
तुम्हें मां याद करते हैं
वो मीठी वाणी हमको मां – सुना दोगी तो तर जाएं
अरे लालों मैं कहाँ गई हूं
मैं इस भवना में रही हूं
जरा हंसकर मुझे तुम मां
पुकारोगे तो क्या होगा
मां खिलाए आठ चरण भवना
चलाई नव चरणा पवना
मां आगे कैसे होना है
बता दोगी तो तर जाएं
अरे भक्तों मां कहती है
बनेगा धाम ये परका
हमारी मैया सांची है
अजूबा मां के दर होगा

17

जय माता की

तारा रानी की कथा

मां हमारी हम मैया जी के हो गये
जनम जनम के जागे सा खड़ा हो गये
मां हमारी हम मैया जी के हो गये

– किन किन तेरा जगत रचाया कौन आवे आधी रात में
रूकमन जगत रचा लिया तारा आवे आधी रात में — मां हमारी
– विधी जान तारा मात से डल पीले केसर रंग लिये
बांट उस भक्तों में रूकमन पहुंची तारा महल में
– तारा ने डल ले लिये वादा किया
तेरे घर मैं आउंगी जागा रचा — मां हमारी
– हरिश्चन्द्र राजा जान गया रानी डोम घर जाएगी
रख लिया सिर गोद में रानी कैसे अब आएगी
– तारा ने ध्यान मां का किया राजा सो गया
मां की कृपा से नज़ारा हो गया — मां हमारी
– लेके डलों को तारा महल से चल पड़ी
आधी आधी रैन अपारा दूजे धरा धनी
– राह में दो चोर मिले तारा घबरा गई
फट गया यह आंचला तारा दौड़ गई — मां हमारी
– पाँव के पहुँचे छोड़ तारा आई जागे में
जै जैकार गुंजी मां के आने से
– राजा की जब आंख खुली क्रोधित हुआ
काढ़ खड़ग तारा को देखन दौड़ पड़ा — मां हमारी
– राह में दोनों चोर मिले आंचल मिला

पाँव के पउंये मिले राजा जान गया

– दोनों पहुंचे आंचल ले राजा आगे बढ़ा

पहुंचा सीधा डोम घर जागा जहां हो रहा — मां हमारी

– तारा जागे में खड़ी घर मां डला था घूम रहा

टका टका घट मांडले में डल रहा

– भोग लगा प्रसाद बांटें रूकमन खड़ी

सबसे पहले गोद तारा की भरी — मां हमारी

– देख नजारा राजा वहाँ क्रोधित हुआ

तारा ने वैष्णव धर्म था भ्रष्ट किया

– जागे से घर को चली तारा गोद भरा

रोक राजा ने कहा तारा गोद दिखा — मां हमारी

– तारा ने मां का ध्यान किया विनती करी

लाज बचाओ मां तेरे पइयां पड़ी

– हुक्म हुआ दुर्गे मात का तारा गोद दिखा

तारा खोली गोद राजा चौंक गया — मां हमारी

– डलियां सुपारी हो गई भात चम्पे हार हुए

पूरियां मगई पान भई मां की मेहर से

– सीरा केसर हो गया बटुक मेवा प्रसाद के

डाल खडग राजा पड़ा पांव रानी के वहां — मां हमारी

– राजा बोला रानी अपना पंथ दिखा

पंथ खण्डे की धार राजा मान जा

राजा न माना खड़ा जिद पर अड़ा

रानी बोली राजा मां का हवन रचा — मां हमारी

18

जय माता की

तारा रानी की कथा

राजा दक्ष प्रजापति की दो कन्या थीं। एक तारा दूसरी रूकमणि। दोनों एकादशी व्रत तथा पूजन कर मैया की पूजा करती थीं। बड़ी बहन तारा भक्ति में लीन रहती किन्तु छोटी रूकमणी को माँस मदिरा सेवन की बुरी लत लग गई थी। वह जंगल में शिकार तथा साधारण जन पर अत्याचार करने लगी।

एक बार दोनों वैष्णो मैया का एकादशी के दिन पूजन करने बैठीं। तारा ध्यान में लीन रही, पर रूकमणी बीच में उठी और अपनी सखियों के संग माँस मदिरा का सेवन करने चली गई। फिर बड़ी बहन के डर के मारे आ कर उसके पास बैठ गई। पूजा समापन पर मैया प्रकट हुईं और क्रोधित होकर उन्होंने रूकमणी को श्राप दिया कि ''तूने माँस मदिरा का सेवन कर के मेरे मन्दिर में प्रवेश किया है, इसी क्षण छिपकली बन जा।'' तारा पर प्रसन्न होकर उसे वर माँगने को कहा – तारा ने अपनी बहन की छिपकली की योनि से मुक्ति मांगी। तब अम्बा जी ने कहा जिन दिन यह पर उपकार करेगी, यह फिर मनुष्य योनि प्राप्त करेगी। समय व्यतीत होता रहा तथा द्वापर युग में पाँच पाण्डव और भगवान श्री कृष्ण आए। जब पाण्डव बारह बरस बनवास काट रहे थे। उस समय श्री कृष्ण ने उन्हें यज्ञ कर ब्रह्म भोज करने की सलाह दी ताकि उन के बुरे दिन कट सकें। सभी योगी यति और मुनि भोजन के लिए आमंत्रित किए गए किन्तु वे ऋषि दुर्वासा को निमन्त्रण देना भूल गए। मुनि ने क्रोधित हो कर यज्ञ को विफल होने का श्राप दिया। जहाँ यज्ञ का भण्डारा पक रहा था वहाँ एक पक्षी खीर में मरा सर्प डाल गया। पेड़ पर बैठी छिपकली बनी रूकमणी यह सब देख रही थी। उसने उस खीर में कूद कर सब की रक्षा के लिए अपने प्राण त्याग दिए। छिपकली को खीर में मरा देखकर ब्राह्मण उसे कोसते हुए फिर प्रसाद बनाने लगे किन्तु जब खीर में सांप होने की बात खुली तो सबने मिल कर उस छिपकली के उद्धार के लिए प्रार्थना की। कुछ समय पश्चात राजा समर्थ के घर में तारा ने जन्म लिया। कन्या को बहुत शुभ जानकर घर घर में उल्लास मनाया गया। एक वर्ष बाद उसी घर में रूकमणी ने जन्म लिया। उसकी जन्मपत्री देख कर ज्योतिषियों ने राजा को उसे त्यागने को कहा।

19

जै माता की

नन्दलाल की कथा

मुगल काल बादशाह शाहजहां के समय की बात है दिल्ली के पास नरेला गांव में नन्दलाल अपनी बहन नन्दा और पिता ईश्वरदास के साथ एक छोटे घर में रहता था। उनका पूरा परिवार मां जगदम्बा का उपासक था।

मैया जो तुमसे नाता न टूटे
दिल की लगी मेरी लगन न छूटे
प्यार भरा ये नाता न टूटे
दिल की लगी मेरी लगन न छूटे
नन्दलाल – नन्दा दोनों भाई और बहना
थे वे उपासक मां जगदम्बा
मां की अखंड जोत घर में थी जगती
मां अपनी कृपा सदा उनपे करती ....मैया जी तुमसे
इक बार जंगल में खोदते मिट्टी
नन्द को मिली मां की सुन्दर मूर्ति
श्रद्धा से मां को घर ले आए
सुबह और शाम मां की जोत जगाएं........................मैया जी तुमसे
धन धान्य की सीमा नहीं थी
मां की कृपा उनपे ऐसी हुई थी
बादशाह ने जब ये किस्सा सुना वहाँ
बहन भाई को कैद किया था ....मैया जी तुमसे
जाते हुए नन्दलाल पिता से बोला
न घबराओ वापिस लाएगी मैया
सुबह की जोत घर में जगाएगें

मां जगदम्बा के गुणगान गाएगें.........................मैया जी तुमसे

आधी रात गई नन्दलाल न सोया

मां का ध्यान लगा नैन भर भर के रोया

मां मेरी आओ कला दिखाओ

सुबहों की जोत घर में जगवाओ.........................मैया जी तुमसे

सच्चे दिल की पुकार उसकी मां ने सुनी थी

पवन वेग से कन्या रूप महल में पहुंची

बादशाह को मां ने नींद से जगाया

शक्ति का अपनी बोध कराया ....मैया जी तुमसे

बादशाह को धरती पे पटका था मां ने

नैनो की ज्योति छिनी थी मां ने

मां ने हुक्म दिया मेरे लालों को छोड़ो

या अपने जीवन से हाथों को धोलो ....मैया जी तुमसे

बादशाह रोया क्षमा मांगी थी मां से

नन्दलाल – नन्दा को छोड़ा अपनी कैद से

दोनों को मान से विदा किया था

खजाने से अपने धन धान्य दिया था ....मैया जी तुमसे

नन्दलाल ने विनती मां से करी थी

बादशाह को नैनो की ज्योति मिली थी

मां मेरी भोली है मेहरां वाली

दिल्ली वाली भवना वाली जग से निराली.........................मैया जी तुमसे

घोड़े पे नन्दलाल पालकी में नन्दा

सुबहों को घर पहुंचे बहना और भैया

मां जगदम्बा की जोत जगाई

मैया की आरती सब मिल गाई

20

जै माता की

आज मेरी भवना वाली के आगे वन्दना

भवना वाली के आगे वन्दना

मैया मालिक है चौदह भुवन की

असी दर दे भिखारी मां

मां जगदम्बे के दर भक्तों

मैया जी मेरी प्यारी – हरदम हो दर्श तुम्हारा

तू रही पर्वत पे विराज

जब भी मां के दर पे आऊँ

तुम दाता त्रिलोक मां

अगर पाप हमरे जो मन में नहीं है

आजा मैया के द्वारे का तू सेवक बन जा

फुलवा बीने दो मां फुलवा बीने हो

नई बस्ती की गलियों में आया करेगे

भोले नाथ से निराला कोई और नहीं

आज मेरी भवना वाली के आगे बन्दना

एक बार वन्दना हजार बार बन्दना

हजार बार वन्दना और बारम्बार वन्दना

आज मेरी दिल्ली वाली के आगे वन्दना

ओ मेरी मैया का प्यारा प्यारा वेष हो ....

मोहे – प्यारा लागे मां का देश हो

ओ मैया शरणी में अपनी रखना..........

मेरी अम्मा रानी के वन्दना

एक बार वन्दना हजार बार वन्दना

आज मेरी भवना वाली के आगे वन्दना

ओ मेरी मैया के गल सुन्दर हार हो ....

मुझे – रहना मैया के दरबार हो

औ मैया चरणो में हरदम रखना ....

मेरी शीलो रानी के आगे वन्दना

भवन मे साकार हो........

ओ मेरी मैया जी सिंह पे सवार हो...........

मां के लाल खड़े मां के द्वार हो

औ मैया लालों को आँचल में छुपाना........

मेरी लौहरां वाली के आगे वन्दना

ओ मेरी मैया का दिल्ली परमधाम हो ....

नई बस्ती लगाया दरबार हो

औ मैया दरबार अपने बुलाना ....

मेरी दिल्ली वाली के आगे वन्दना

हजार बार वन्दना और बारम्बार वन्दना

आज मेरी भवना वाली के आगे वन्दना

21

जय माता की

मैया मालिक है चौदह भुवन की
मैया रक्षा करे भक्तों की
आशा लेकर जो भी आवे
भर भर झोलियाँ वो ले जावे
ओ मैया रख लो
ओ मैया रख लो शरण हमें अपनी.........
मैया मालिक है चौदह भुवन की
भोर होती होता उजाला
सूरज की किरणों में ज्वाला का नज़ारा
ओ मां की जोत है –
मां की जोत है चंदा किरण सी ....
मैया मालिक है चौदह भुवन की
मां का भेद कोई न जाने
मैया सब घट घट की जाने
ओ मेरी मैया को –
मेरी माँ को खबर पल पल की.........
मैया मालिक है चौदह भुवन की
मां की कृपा जिस पर होवे
वो ही मां के दर्शन पावे
उसको मिले –
उसको मिले खुशी जीवन की..........
मैया मालिक है चौदह भुवन की

22

जय माता की

मां जगदम्बे के दर भक्तों
सुख बरसे दुःख का नाम नहीं
सब झोली फैलाकर लेते हैं
कोई ज़ोर जबर का काम नहीं
अनदेखे हाथो से देती – मां सबपे खुशियाँ लुटाती है
जो मां तक पहुँच नहीं पाता – मां उस तक हाथ बढ़ाती है
सबके सुख चैन की चिन्ता है
पर देखती अपना आराम नही
ये रात और दिन के अन्तर को – हम जैसे भिखारी देख रहे
ये सर्दी गर्मी बारिश को – हमसे संसारी देख रहे
जो दाती हर पल बाँट रही
सुन के बच्चों की दुःख गाथा – ममता की धारा फूट पड़े
आंचल में छिपाकर रख लेती – उसके संकट पर टूट पड़े
जो मां का सेवक बन जाए
वो वक्त के हाथों गुलाम नहीं
तू ने एक मन्दिर बनवाया और नाम की तख्ती लगाई है
जो माला तू अर्पण करता – मां की बगिया से चुराई है
मां त्रिलोकी की मालिक है
पर लिखा कही भी नाम नहीं
सब झोली फैलाकर लेते हैं
कोई ज़ोर जबर का काम नहीं

23

जय माता की

मैया जी मेरी प्यारी – हरदम हो दर्श तुम्हारा
हृदय में ध्यान मेरे – मैया जी हो तुम्हारा
पीकर के प्रेम प्याला
इस भाँति मस्त होऊँ
करता रहूँ मैया जी – गुणगान मैं तुम्हारा
तेरे रूप में मग्न हो
सब जग को भूल जाऊँ
तन का न ध्यान होवे – इक ध्यान हो तुम्हारा
तेरे केश माँ लहराये
तेरी सिंह की सवारी
माथे मुकुट लगा हो – यही दर्श हो तुम्हारा
विनती मेरी यही है
चरणों में मात रखना
हम दीन गरीबों को – माँ आपका सहारा

24

जय माता की

तू रही पर्वत पे विराज
विराज – आज सिंह चढ़ी आई महारानी
तेरे सेवक रहे पुकार
पुकार – आज सिंह चढ़ी आई महारानी
तेरी पर्वत गुफा सुहानी है
जहाँ पिन्डी रूप भवानी है
चरणों में गंग की धार
मां धार – आज सिंह चढ़ी आई महारानी
मन्दिर में घंटे बाजे हैं
तेरे संग में लंगर साजे हैं
भैरों है पहरेदार
पहरेदार – आज सिंह चढ़ी आई महारानी
मन विकल है नैना तरस गये
तेरी याद में छम छम बरस गये
दर्शन पा हुए निहाल
मां निहाल – आज सिंह चढ़ी आई महारानी

25

जय माता की

लोग कहे जय माता की

जब भी मां के दर पर आऊँ – लोग कहे जय माता की
लोग कहे जय माता की – लोग कहे जय माता की

ऊँची लम्बी तेरी चढ़ाई
पहले बहुत डराती है
सबको देने वाली सहारा
बाँह पकड़ ले जाती है
जब भी आगे कदम बढ़ाऊँ – लोग कहे जय माता की

कर्मों वाले ही दाती
तेरा पौड़ी चढ़ के आते हैं
स्वर्ग तलक की है ये सीढ़ी
देवता आते जाते हैं
आते – जाते शीश झुकाऊँ – लोग कहे जय माता की

मां के इस जैकारे में ही
सब वेदों का सार है
शक्ति के इस जैकारे में
शक्ति मां की अपार है
जब भी तेरी जैकार बुलाऊँ – लोग कहे जय माता की

जो भी मां का ध्यान लगाए
मां के ध्यान में आता है
जो गुण भोली मां के गाए
वो गुणवान हो जाता है
जब जब तेरी भेंटें गाऊँ – लोग कहे जय माता की

26

जय माता की

तुम दाता त्रिलोक की मां

तुम माता त्रिलोक की मां

प्रथमे तैनू ब्रह्मा ध्यावे

ब्रह्मा ध्यावे वेद पढ़न को

ब्रह्मा ध्यावे वेद पढ़न को वाको दीजे वेद बताये

तुम दाता त्रिलोक की मां

द्वितीय तैनू विष्णु ध्यावे

विष्णु ध्यावे राज करन को, वाको दीजे राज बताये

तृतीय तैनू शंकर ध्यावे

शंकर ध्यावे योग करन को, वाको दीजे योग बताये

चौथे तैनू चार युग ध्यावे

सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग भक्तों का भंडार भराये

पंजवे तैनू ध्यानू ध्यावे

ध्यानू ध्यावे भक्ति करन को वाको दीजे भक्ति बताये

27

जय माता की

अगर पाप हमरे जो मन में नहीं है
तो मैया को पाना तो मुश्किल नहीं है
जिसे प्यार सूरत से तेरी नहीं है
वो तेरा कहलाने के काबिल नहीं है
जो अभिमान से सिर को ऊँचा किए हैं
वो दर सर झुकाने के काबिल नहीं है
हारे न हिम्मत अरे मन संभल जा
जग और चल दूर मंजिल नहीं है
जो द्वारे पे आ जा के कहते है बातें
वो द्वारे पे आने के काबिल नहीं है

28

जय माता की

आजा मैया के द्वारे का तू सेवक बन जा

तू लाल बन जा

झोलियाँ फैला के तू भिखारी बन जा

मां की भक्ति से दिल को करार मिलता

किस्मत से है मैया जी का प्यार मिलता

हित अपना जो चाहे हितकारी बन जा

मां की ममता का जिसको सरूर हो गया

वो ध्यानू की तरह मशहूर हो गया

तू भी लंगर वीर जैसा आज्ञाकारी बन जा

इस दर से है सबको मुराद मिलती

मां के प्यारों को मैया साकार मिलती

गुण मैया के गाके गुणकारी बन जा

तेरी सुन के पुकार अम्मा रानी आएगी

होगा दिल में उजाला लेके नूर आएगी

दिल भक्ति में रंग के लिलारी बन जा

झोलियाँ फैलाकर तू भिखारी बन जा

29

जय माता की

फुलवा बीने हो मां फुलवा बीने हो
गुलाब रंग बीने हो . श्वेत रंग बीने हो
छोटी छोटी मालनियां और लम्बे वाके केश
फुलवा बीनत बीनत गई मैया जी के देश
फुलवा बीनत बीनत मेरी उंगली पिराए
उंगली पीड़ाए मेरी उंगली पिड़ाए
उंगली की पीड़ मो पे सही भी न जाए
फुलवा बीनत बीनत मैनू हो गई शाम
हो गई शाम मैनू हो गई शाम
अब तो चल हम दिल्ली बसेंगे मैया जी के धाम

30

जय माता की

नई बस्ती की गलियों में आया करेंगे
मैया जी मैया जी पुकारा करेंगे
बाबा जी बाबा जी पुकारा करेंगे
यहीं पर मिली हमको है मैया प्यारी
यही पर मिले हमको है भोले प्यारे
दोनों के चरण – चित लगाया करेंगे
बनाकर ह्रदय में हम प्रेम मन्दर
मैया बाबा को विराज इसके अन्दर
इसी में सदा दर्शन पाया करेंगे
बसायेंगे तुमको मां आंखों में दिल में
रहे तेरे दर पे न जाए मां छड़ के
तुम्ही से सदा लौ लगाया करेंगे
जो रूठोगी हमसे तुम मैया प्यारी
चरण पड़ तुम्हें हम मनाया करेंगे
मैया जी मैया जी पुकारा करेंगे

31

जय भोले बाबा

भोले नाथ से निराला कोई और नहीं
गौरी नाथ से निराला कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला कोई और नहीं
ऐसी बिगड़ी के बनाने वाला और नहीं
भोले नाथ से निराला कोई और नहीं
उनका डमरू डम डम बोले
अगम – निगम के भेद को खोले
ऐसा भक्तों का रखवाला कोई और नहीं
काया देव करवट बदले
पाप चमकते अगले पिछले
ऐसा पापों को मिटाने वाला और नहीं
तुमने जग का कष्ट मिटाया
बाबा हमको शरणी लगाया
अब हमको बचाने वाला – और नहीं

32

जय भोले बाबा

सुखदाई भोले बाबा, आधार तुम हो मेरा
जलवा नज़र है आता, मैया के संग तुम्हारा
प्रत्येक जीवधारी, सन्देश यह सुनाता
वह दिल तुम्ही से रोशन, जिसमें भरा अंधेरा
प्रेमी है हम तुम्हारे – तुम हम से प्यार करते
तुमने सुनी है पल पल, जब भी तुम्हें पुकारा
लालों की तुमसे विनती – भोले बाबा बस यही है
अब तो हमे बचा लो, अहम ने हमको मारा

33

जय भोले बाबा

अर्ज हमारी सुन लेना तुम, हे भोले भन्डारी जी
सबका बेड़ा पार करो हे बाघम्बर के धारी जी
जटा में शिव के गंग बहत है – पीते हैं भंग का प्याला
भस्म रमाए बैठे भोले – नाग गले में है डाला
भक्तों का दुःख हरने वाले, है भोले त्रिपुरारी जी
सबका बेड़ा पार करो है , हे भोले भन्डारी जी
भांग धतुरा भोग लगावें – हाथ में है डमरू भाला
बाघम्बर है तन पे लटकता – योगेश्वर है मतवाला
लिए गजानन गोद मे बैठे, साथ में है मैया प्यारी
रावण ने जब करी तपस्या – मुँह मांगा फल वो पाया
श्री राम जब बन में पहुँचे – कपि रूप तुमने धारा
हनुमत बन कर तुमने ही, सोने की लंका जारी
लाल तुम्हारे शरण बिहारी – शिव कैलाशी मेंहर करो
कृपा अपनी हम पे कर दो – अवगुण हमरे माफ करो
तेरे ही गुणगान करे हम, हे भोले भन्डारी जी

34

जय भोले बाबा

शिव भोला भन्डारी रे डमरू के बजिया
लीला तेरी न्यारी रे डमरू के बजिया
डमरू के बजिया सृष्टि के नचइया
आ गये शरण तुम्हारी रे, डमरू के बजिया
ब्रह्मा भी नाचे, विष्णु भी नाचे
नाचे त्रिलोकी सारी रे, डमरू के बजिया
ब्रह्माणी नाचे लक्ष्मी भी नाचे
नाचे देवियाँ सारी रे, डमरू के बजिया
गंगा भी नाचे, जमुना भी नाचे
नाचे नदियाँ सारी रे, डमरू के बजिया
सूरज भी नाचे, चंदा भी नाचे
नाचे सृष्टि सारी रे, डमरू के बजिया
श्री राम जी नाचे, लक्ष्मण भी नाचे
नाचे जनक दुलारी रे, डमरू के बजिया
श्री कृष्णा भी नाचे, बलदाऊ भी नाचे
नाचे राधा प्यारी रे, डमरू के बजिया
मैया भी नाचे, बाबा भी नाचे
नाचे संगत सारी रे डमरू के बजिया
जोड़ो जाए बलिहारी रे, डमरू के बजिया
लाला भी नाचे, लाली भी नाचे

35

जय बाबा की

तुमसे लागी लगन
ले लो अपनी शरण भोले बाबा
तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण, भोले बाबा
मेटो मेटो जी संकट हमारा
निशदिन तुम को जपूँ, पर से नेहा तजू, भोले बाबा
तेरे चरणों में शीश हमारा
जग के दुःख की तो परवाह नहीं है
स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है
मेरो जन्म मरण, छूटे आवा गमन, भोले बाबा
तुम्हें करते नमन बारम्बारा
बार बार तेरा दर्शन पाऊँ
छवि नैनो में तुमरी समाऊँ
अपनी शरण रखो, यूं भटकने न दो, भोले बाबा
तेरे चरणों में शीश हमारा
मैया जी के तुम स्वामी कहाओ
हम बच्चों के बाबा कहाओ
सदा सहाई रहो, जुदाई न हो, भोले बाबा
तेरे चरणों में शीश हमारा

36

जय जय श्री राधे

वृन्दावन नाम आधार – जपे जा राधे राधे
जये जा राधे राधे, भजे जा राधे राधे
राधे अलबेली सरकार – जपे जा राधे राधे
जो वृन्दावन को जाए और राधे नाम न गाये
उसके जीवन को धिक्कार – जपे जा राधे राधे
ये वृन्दावन की लीला, कोई जाने रसिक रसीला
राधे कृष्ण को रूप निहार – जपे जा राधे राधे
जब तक दुनिया में रहना, राधे राधे जपते रहना
जिनके सेवक हैं मुरार – जपे जा राधे राधे
जो राधा नाम न होता तो कृष्ण अधूरा रहता
जै राधाकृष्ण पुकार – जपे जा राधे राधे

37

जय माता की

मात अंग चोला साजे......हर इक रंग चोला साजे
मात की महिमा देखो .....ज्योत दिन–रैना जागे
मात अंग चोला साजे......हर इक रंग चौला साजे
मां ओढ़े लाल चुनरिया, गहनो का करे श्रंगार
शेरों पर करे सवारी, मां शक्ति का भंडार
मां के नाम का भक्ताँ जगत में डंका बाजे.......
मात अंग चोला साजे......हर इक रंग चोला साजे
मां के तेज भरे दो नैना, जलती ज्योति के समान
मां के द्वारे शीश झुकाए, क्या निर्बल क्या बलवान
मां के चरणों में आके, भाग्य न कैसे जागे.....
मात अंग चोला साजे......हर इक रंग चोला साजे
ऊँचा है मन्दर मां का, ऊँचा मां का स्थान
संसार में न कोई होगा, दूजा मां तेरे समान
मां के नाम का भक्ताँ जगत में डंका बाजे
मात अंग चोला साजे......हर इक रंग चोला साजे
जो आए श्रद्धा लेकर वो ले जाए वरदान
हे माता तू भक्तों के सुख दुःख का रखती ध्यान
मां की शरण मे आके, भाग्य न कैसे जागे
मात अंग चोला साजे......हर इक रंग चोला साजे

38

जय माता की

तूने मुझे बुलाया शेराँ वालिए........
मैं आया मैं आया मेहराँ वालिए
सारा जग है एक बंजारा
सब की मंजिल तेरा द्वारा
ऊँचे पर्वत लम्बा रस्ता......
ऊँचे पर्वत लम्बा रस्ता......
पर मैं रह न पाया शेराँ वालिए.........
तूने मुझे बुलाया मेहराँ वालिए........ प्रेम से बोलो
तेरे पथ में मिल गये साथी
सूने मन में जल गई बाती
मूँह खोलू क्या तुझसे मांगूं ....
मूँह खोलू क्या तुझसे मांगूं
बिन मांगे सब पाया शेरां वालिए........
तूने मुझे बुलाया मेहराँ वालिए
कौन है राजा कौन भिखारी
एक बराबर तेरे सारे पुजारी
तूने सबको दर्शन दे के..........
तूने सबको दर्शन दे के
अपने गले लगाया मेहरां वालिए.......
मैं आया मैं आया मेहरां वालिए

प्रेम से बोलो — जय माता की
सब मिल बोलो — जय माता की
शेरां वाली — जय माता की
मेहरां वाली — जय माता की
मां गुफा वाली — जय माता की
मां वैष्णो मैया — जय माता की
मां जग की खिवइया — जय माता की

39

जय माता की

फुल्लां दा बनाया तेरा हार शेरां वालिए.......

गोदी विच बिठा के दे दे प्यार शेरां वालिए

भगत ध्यानू ने ध्यान तेरा लाया सी

कटे हुए घोड़े दा मां शीश मिलाया सी

शहनशाह दा तोड़या अहंकार शेरां वालिए.......

गोदी विच बिठा के दे दे प्यार शेरां वालिए

चण्डी रूप धार के तू दुष्टा नू मारया

श्रद्धा लेके आवे जो तू उसका बेड़ा तारया

सबना लई खुल्ला तेरा द्वार शेरां वालिए........

गोदी विच बिठा के दे दे प्यार शेरां वालिए

40

जय माता की

जय श्री कृष्ण

मुझे तेरा ही सहारा ओ सांवरे
तुझे लालों ने पुकारा ओ सांवरे
यशोदा मैया के दुलारे नन्द बाबा जी के प्यारे
घनश्याम बंसी वाले तेरे रूप निराले
ओ गइया के चरइया ओ माखन के खिवइया
बलराम जी के भैया ओ कृष्ण कन्हैया
ओ मुरली के बजइया राधा रानी के सांवरिया
ओ रास के रचइया जग की नइया के खिवइया
ओ श्याम मुरारी तेरी लीला है न्यारी
शंख चक्र गोवर्धन धारी श्री बांके बिहारी
काली नाग पछाड़ा तू ने पूतना को मारा
तू ने कंस को मारा अपने भगतों को तारा

41

जय माता की

मैनू आंखों जी मैया दा फकीर
मां भवानी है पीरा दी भी पीर
मेरी मइया है पीरां दी भी पीर
मइया दे पुजारियां दे पैरा दा पुजारी मैं
दाती दे भिखारियां दी भीख दा भिखारी मैं
मेरे नैना ते ....
मेरे नैना ते विच वसे, मइया दी तसवीर
मन दे मन्दर विच मां दी ज्योत मैं जगाई है
सिंह सवारी उत्ते अम्बे रानी छाई है
धूल मां दे ....
धुल मां दे चरणा दी, बनी मेरी तकदीर
सुए सुए चोले वाली मात नु रिझाना है
मात नु रिझा मां दा प्यार झोली पाना है
भवना वाली मां दा प्यार झोली मैं नू पाना है
सच्ची मां दा ....
सच्ची मां दा द्वार मेरी मंजिल आखिर
अम्मा रानी मेहरां वाली शक्ति ओदी आला है
मइया दर से न कोई खाली जाने वाला है
मां सहाई है ....
मां सहाई है हर वेले बच्चयाँ नू धीर

42

जय माता की

जय हो जय हो कि संगता चली माई दर्शन नू
जोरो जोरो जैकारे लगालो कि संगता चली
जय हो जय हो कि जम्मू शहर पहुंच गये
रघुनाथ के दर्शन पाओ कि जम्मू
बाबे वाली के दर्शन पालो कि जम्मू
जय हो जय हो कि कटरे की बस फड़ लई
मां दी राहों नजर पालो, कि कटरे की
जोरो जोरो जैकारे लगालो कि कटरे की
जय हो जय हो कि बान गंगा पहुंच गये
गंगा मैया में गोते लगालो
जन्मों जन्मों के पाप मिटालो
जय हो जय हो कि चरण पादुका डेरे आगये
मां दे चरणों में धोक लगालो
जय हो जय हो आद क्वारी मां दे दर आ गये
मां दे ध्यान इच गर्भ जून लंगो
प्यारी मैया से मुक्ति वर मंग लो
जय हो जय हो कि हाथी मत्थे चढ़ाइयां आ गईं
पोढ़ी –2 चढ़ता जा जै माता की कर दा जा
प्रेम से बोलो सारे बोलो
जय हो जय हो सांझी छत पहुंच गये
मां दे भवन नजारा पा लो
जोरों जोरों जयकारे लगालो
जय हो जय हो कि गुफा द्वारे संगता आ गई

मां दे पिण्डियां रूप दर्शन पालो

वैष्णों माई दे दर्शन पालो

काली माई दे दर्शन पालो

सरस्वती माई दे दर्शन पालो

43

जय माता की

जय श्री कृष्ण

छड दे छड दे पीताम्बर राधा जाने दे
मुझे भगतों की लाज बचाने दे

मुझे भगतों ने पुकारा राधा जाने दे
सभा में द्रोपदी पुकारे राधा जाने दे
मुझे द्रोपदी का चीर बढ़ाने दे

रण में अर्जुन ने पुकारा राधा जाने दे
मुझे गीता वाला ज्ञान सुनाने दे

वन में भीलनी पुकारे राधा जाने दे
भोग सुच्चे झूठे बेरों का लगाने दे

भक्तिन मीरा ने पुकारा राधा जाने दे
विष के असर से मीरा को बचाने दे

44

जय माता की

पहनायें माई जी तुआनू हार मोतियां दे
हार मोतियां दे माई हार मोतियां दे

पहला हार तुआनु ब्रह्मा पहनाया
अपनी शक्ति नाल, माई हार मोतियां दे

दूजा हार तुआनू विष्णु पहनाया
लक्ष्मी प्यारी नाल, माई हार मोतियां दे

तीजां हार तुआनू रामा पहनाया
जनक दुलारी नाल माई हार मोतियां दे

चौथा हार तुआनु कान्हा पहनाया
राधा प्यारी नाल माई हार मोतियां दे

फुल्लां दे हार तुआनु बच्चे पहनायें
रखना अपने नाल माई हार मोतियां दे

45

जय माता की

जैकारा शंकर सुवन केसरी नन्दन का

लंगर वीरां वे वीरां, लंगर वीरां वे वीरां
महावीरां वे वीरा, महावीरा वे वीरा
ओ लोकड़ वीरा वे वीरा, महावीरा वे वीरा
अंजनि मां दा पुत्र कहावे
बाबा पवन दा वीरां मेरी माई दआ वजीरा
ओ मैया दा तु पुत्र कहावे
आजा लौकड़ वीरा वे
मां कलकत्ते वाली आई
आजा लौकड़ वीरां

सुक्खे वन हरियावल कर दे
नदी बहावे नीरा, लौकड़ वीरां वे

बाछन गोदी लाल खिलावे
बहन मिलावे वीरा
अन्धे नू तू नेत्र देवे
कोड़ी देवे शरीरा
जब–2 पीड़ पड़ी भक्तों पे, आके पर्वत चीरा
लंगर मोड़े लाल निशाना, मुख पाना दा नीड़ा
श्री राम दे काज संवारे, सीया सुधि लाए वीरा
रावण दी जय सभा पधारे, लंक जराऐ दीन्हा
लक्ष्मण नू जद शक्ति लागी, लाए संजीवन दीन्हा

46

जय माता की
जो मां के कोलों रहना है
तो मां के दर सर झुक जाए

जमाने से जो बचना है

तो मां के चरणों रह जाए

मां मेरी बड़ी – मेहरां वाली है

ममता प्यारी मां की – सबसे न्यारी है

मां की ममता पा कर के

मेरा मन हर्षित हो जाए

मां अपने दर पर – आप बुलाती है

दर पर बुला मैया – नित नये दर्शन देती है

सांची मां के दर्शन से

हर प्राणी यहां तर जाए

मां बच्चों को कोलों पाकर – खुश हो जाती है

हमको अपने नाल बैठाकर – रसीली वाणी सुनाती है

भोली मां को रिझा कर के

दरश बाबा का कर जाए

कण कण में मां की – महक समाई है

रोम रोम हमरा – मां का करजाई है

मेरी मां मांगे न लेखा

मां का दिल दरयाई है

ध्यानु भगत ने मां को ध्याया – जग विच नाम कमाया

मांगे मैया तुमरी शरणी – जो दर तेरे आया

भेंटा मां सुनाकर के

मां की शरणी रह जाए

बेटा चरणां नम जाए

47

जय माता की

आनन्दी आनन्द करो, कल्याणी कल्याण

आठ पहर चौसठ घड़ी, दे ओ चरणों का ध्यान

बांह फड़ लै मइया जी इक बारी

भवानी मेरी बाँह फड़ लै

कल्याण करो कल्याणी

उपकार करो उपकारी

मेरी दाती सिंह सवारी

तन दी नइया होई पुरानी, मन मांझी नित करे मनमानी

डुब न जाँवा आप भवानी ....

मैनु तारो तारन हारी, भवानी मेरी बाँह फड़ लै

आस दी माला टुट न जाए, सांस दी दौलत लुट न जाए

भुल्लयाँ हुँ माँ रस्ते पाये ....

मेरी राखो लाज भवानी, भवानी मेरी बांह फड़ लै

मां दी ज्योतां हैं नूरानी , ज्योतां वाली ज्वाला रानी

मां दी शक्ति अपरम्पारी........

मां है जानी जान भवानी, भवानी मेरी बांह फड़ लै

ब्रह्मा विष्णु गणपति माई, नाल है भोले बाबा साईं

मां दी ममता जग तो न्यारी.........

सानु गले लगालो भवानी, भवानी मेरी बांह फड़ लै

मां दी महिमा वेदों ने गाई, जग जननी मइया कल्याणी

मां तेरे दर्शन नैन बसावीं.........

सानु चरणों लगा लो भवानी, भवानी मेरी बांह फड़ लै

48

जय माता की

आए नी माए तेरे लाल
ओ माए भोली दर्शन दे
दर्शन दे मां दर्शन दे मां, दर्शन दे मां दर्शन दे मां
आस लगाए तेरे लाल
ओ मांए सोनी दर्शन दे
चांदी की कोली विच ज्योत जगावां
मां मेरी हो जा दयाल
पान सुपारी ध्वजा और नरेला
भेंटा ले आए तेरे लाल
केसर का माथे तिलक लगावां
तक तक होवां निहाल
जरी वाला जोड़ा मां के अंग है साजे
चुन्नी है मां की लालों लाल
शीश पे मां के मेरी मुकुट विराजे
हाथों में मेहन्दी लाल
कानों के कुण्डल मां के हीरों जड़े हैं
गले वैजन्ती माल
बाहों में मां के मेरी कंगन विराजे
(हाथों में मेहन्दी लाल) अंगुली में मुद्रिका सोना
कमर की तगड़ी मां की कुन्दन जड़ी है
मां के गुच्छे में हीरे मोती लाल
पैरों में मां के मेरी पायल है बाजे
लहगें में चुन्नर हजार

फूलों का माई मैंने हार गुधायां

बीड़े ले आए भर थाल

चन्दन चौकी मैया आन विराजो

भोग लगाओ मेरी माए

मां तेरी ममता जग तो निराली

झोली फैलाएं तेरे लाल

49

जय माता की

पर्वत दे आ कावां वे, तैयों दूर बुलावां वे
मेरी माई दी गल सुना मैनु
तैनु चूरियां कुट कुट पावां रे, पर्वत दे आं कावां
दस ब्रह्मा विष्णु महादेव, ओदी पूजा किददा कर देवे
ओदे नाम दे सागर विच किददा, इन्द्र ते नारद तरदे ने
गन्धर्व पिरोकें फुल्लां दे
किस वेले हार ले ओंदे ने
किस वक्त कुबेर खजाने दी
ओथो चाबी मंगन आंदे ने
मां दा भवन सुनहरी धोवन नू
किवें घिर घिर आन घटावा रे, पर्वत दे आं कावां
कदों पींगा झूटन लग्गियां ओथे नोंवे दुर्गा शक्तियां
किस वेले सुर नर ऋषि मुनि ओथे बैठे करदे भक्तियां
केड़े उंच्ची अलक जगावदे
केड़े सिमरन करदे मौन वे
मां जिना नू वर देई जा रही
ओ भागां वाले कौन वे
किस तरफों चन्दन बिज्जियां
मां दे दर ते औन हबावां रे, पर्वत दे आं कावां
किवें मां दी ज्योतां जग गई
किवें ज्योत होई प्रचन्ड और नूर दी झोली भर गई
किवें चरण माई दे धो धोकर गंगा भी झटपट तर गई
दस भगत ध्यानु किस तरह

ओदी भक्ति अन्दर खो गया

ओ सिर दी भेंट चढ़ाकर ते

किवें मां दा प्यारा हो गया

ओ केढ़ा था जिन्ने आखया

के मांवा ठन्डिया छावाँ रे, पर्वत दे आं कावां

किवें अकबर जागा भरणी में, ओने मां दा दर्शन पाया था

किवें भ्रम भुलाया भैरों का, और ओनू मां ने तारा था

किवें तारा मां दी भक्ति से

जगराते पूर्ण करान्दी ऐ

होके सिंह सवार कदो मैया

लालों नू दर्श करान्दी ए

भक्तों की लाज बचाने नू

भगतों की लाज बचाने नू, किवें मैया दौड़ी आवां रे

50

जय माता की

जय शिव शंकर

भोला नाचे डमरू बाजे

घुंघरू बाधें भोला नाचे

बम बम बम बम भोला नाचे, डम डम डमरू बाजे

शंकर शम्भू महादेव, पग घुंघरू बांध के नाचे

भोला नाचे डमरू बाजे

घुंघरू बाधें भोला नाचे

शंख नाद किये हैं भोला हाथ में डमरू थाम लिया

भस्मी तन पे खूब मली है और बाघम्बर धार लिया

माथे तिलक शीश पे चंदा

गले में विषधर टांगे, भोला नाचे डमरू बाजे

नाच रही है गंगा सिर पे खुली जटा लहराऐं

ऐसी भांग चढ़ी भोले को मैया जी मुस्काऐं

देव लोक में शोर मचा है

मन भावन शम्भु लागे, भोला नाचे डमरू बाजे

51

जय माता की

आऐ मां तेरे दरबार मैया रानी लाज रखो जी

लाएं मां तो से अरदास मैया रानी शरणी रखो जी

ध्यानु की तुम ने लाज बचाई

ध्यानु की तु ने मां.................

शेर चढ़ी मैया तुम चली आई

हमें दे दो ....

दे दो हमें भी ध्यान

मैया रानी ध्यान रखो जी

शुम्भ निशुम्भ को तुमने मारा

महिषासुर मां तुम संहारा

तुम हो सारे

सारे जगत की आधार

मैया जी उद्धार करो जी

जब जब धर्म की होइ हानी

चंडी रूप धरे महारानी

तुम हो करती

करतीं जगत उपकार

मैया रानी हाथ धरो जी

मां तुम बुलाओ हम चले आए

तुमरे गुण मां निशदिन गाएं

तुमरे दर्शन जग से निराले

मैया रानी दर्श दे ओ जी

तुमरी ममता जग से निराल

मैया रानी प्यार करो जी

52

जय माता की

पहले शेरां वाली मां नू मनाइये जदों भी कोई काम करिये
दिलों ध्यान लाके दाती नु ध्याइये जदों भी कोई काम करिये

मां कोलों पर्दा न रखो किसी गल दा
मां दे हुक्म बिन जहान नइयो चलदा
मां नु हृदय विच अपने बैठाइये जदों भी कोई काम करिये

देखने जे तुषां ओढ़े रंग ने निराले जी
कर दिये डोर अपनी उस दे हवाले जी
मां दे तार नाल तार नु मिलाइये – जदों भी कोई काम करिये

सुखां विच भुलइये न दुःखां विच डोलिये
राजी रहे रजा विच मन्दा नाही बोलिये
मां दा हर पल शुक्र मनाइये – जदों भी कोई काम करिये

मां नु जो भुल्लोगे ते ओ भी भुल्ल जाएगी
मां ने भुल्ली ते जिन्दगी रूल जाएगी
मां नु भुल्ल के नी कदे न भुलाइये – जदों भी कोई काम करिये

हिरयां नु जानदी कंच नु भी जान दी
सच नु पहचान दी झूठ नु भी जान दी
मां दे सामने पखण्ड न रचाइये – जदों भी कोई काम करिये

53

जय माता की

जग जननी मां ज्योतां वाली जगमग ज्योत जगे
धरती अर्श पाताल त्रिलोकी नूरो नूर भरे
नैना दे विच नैना देवी, मन विच मनसा रानी
चिन्तपुर्णी मां चित विच वस्से, बाहवां विच भवानी
सां वां विच मां शीतला रानी, कष्ट कलेश हरे
कंठ वसे मां चण्डिका रानी, जिव्या वसे सरस्वती
बुद्धि दे विच धर्म धारणी, दिल विच वस्से शक्ति
कण कण विच विराजे मैया, तन विच वास करे
अन्नपूर्णा भरे भन्डार, मां दे खेल न्यारे
शंकर दे अंगसंग गवरजा, लक्ष्मी विष्णु द्वारे
नारद नु संग लैके ब्रह्मा हाजिरी रोज भरे
भवना वाली मां दे भवन में, वैष्णो मां वरदानी
मेहराँ दी मीं बरसावे दाती, काली डेरे वाली
विषय विकार अहंकार क्रोध नु, ज्वाला भस्म करे

54

जय माता की

कान्हा तेरी बन्शी बाजे जी
श्याम तेरी बन्शी बाजे जी

यशोदा मां सुनया नन्द बाबा ने सुनया
ओ श्याम हमें आज सुनादो जी

राधा ने सुनया मीरा ने सुनया
गोपी ने सुनया ग्वालों ने सुनया
सुदामा ने सुनया धन्ना ने सुनया
राम जी ने सुनया बलराम जी ने सुनया
अम्मा ने सुनया बाबा ने सुनया
ओ श्याम हमें आज सुनादो जी

55

जय माता की

भुल्लां माफ करी मां

भुल्लां माफ करी मां बेड़े पार करो मां

मैया मैं हुं भुल्लन हार

दाती तु है बकसन हार

मैं तो डोल रहा मझदार

मैं नु तार भोली मां, सब नु तार भोली मां

जेढ़ा दर तेरे ते आवे

खाली झोली कदे न जावें

रोता आवें हंसता जावें

मैं तो डोल रहा मझदार

मैनु तार मां, सबनु तार मां

तेरे बिना न कोई मेरा

तेरे दर लाआ मैं डेरा

मेहरां वाली आसरा तेरा

मैं तो डोल रहा मझदार

मैंनु तार मां, सबनु तार मां

मैं न मंगा चांदी सोना

मैनु दौलत का न रोना

रख अपने दिल का कोना

मैं तो डोल रहा मझदार

मैं नु तार मां, सबनु तार मां

मेरो मां भवना वालिये मेरी मां दिल्ली वालिये

मेरी मां पहाड़ा वालिये मेरो मां गुफा वालिये

मेरी मां ज्योता वालिये मेरी मां लाटा वालिये

56

जय माता की

मां दे दर्शन दा है वेला, भगता दा लगया मेला
किथ्थे खेड़ दिया ने कंवका, किथ्थे नच दिया ने संगता
तेरे द्वारे ते लगया रौनका, चित्त जाने नु एथो करदा नहीं
जी करदा है एथ्थे वस जावां, तैनु तक तक दिल ए भरदा नहीं
तेरी ममता दे वेड़े विच माइये, मै क्यों न सदा लई खो जावां
मेरे रूँ रूँ विच तू रम जावे, मैं सचमुच तेरा हो जावाँ
इस जग के बिना में कट लेंगा
मेरा तेरे बिना मां सरदा नहीं, सरदा नहीं
मैनु ब्रह्मा विष्णु शिवशंकर, तेरी सूरत अन्दर दिखदे ने
होर कौन है दाती तेरे जया, होर भरे भण्डारे किसदे ने
जिन्ने जितिया तेरा प्यार मां,
ओ खेल कोई भी हरदा नहीं

57

जय माता की

जी करदा है एथ्थे बस जावा

तेरे गुण गावां मैं हर वेले, तेरे दर्शन माता पांदा रहूँ

असी भुलिये न एक दूजे नू, तेरे भवना माता आंदा रहूँ

बिन तेरी कृपा तो जग जननी

भवसागर तो कोई तरदा नहीं

मां दे द्वारे ते लगया रौनका

चित जाने नु एथों करदा नहीं

दिल करदा है तेरे कोलो रह जावाँ

तैनु तक तक दिल मेरा भरदा नहीं

जी करदा है एथ्थे बस जावाँ

जी करदा है एथ्थे बस जावाँ

तैनु तक तक दिल ए भरदा नहीं

भरदा नहीं

इस जग के बिना मैं कट लेंगा

इस जग के बिना मैं कट लेंगा

मेरा तेरा बिना मां सरदा नहीं

सरदा नहीं

जिन्हे जितिया तेरा प्यार मां

जिन्हे जितिया तेरा प्यार मां

ओ खेल कोई भी हरदा नहीं

हरदा नहीं

बिन तेरी कृपा तो जग जननी

बिन तेरी कृपा तो जग जननी

भवसागर तो कोई तरदा नहीं

तरदा नहीं

58

जय माता की

भर लो झोलियां, भर लो झोलियां
सारे जय माता की बोल के
मां भण्डारे बैठी खोल के
शीश चरणों में झुका के
मैया बाबा को रिझाके
ओ ....ओ.......................ओ.......................
यंहा जिसने अलक जगाई
उसने मां की नेमत पाई
मैया उसकी बनी सहाई
मां अन्न धन देने ... जय हो
मां अन्न धन देने वाली है
मां भगतों की रखवाली है.......... भर लो झोलियां
जो जन आके मां के द्वारे
सच्चे मन से इसे पुकारे
उनको होते वारे न्यारे
कहते हैं अम्बर ....जय हो
कहते हैं अम्बर और जमी
मेरी मां का सानी कोई नहीं .... भर लो झोलियां
मां सोए भाग जगा देती
कागों को हंस बना देती
भवरों से नाव बचा देती
कुल सृष्टि की ये ....जय हो
कुल सृष्टि की ये रानी है
मां तीन लोक को स्वामि है ....भर लो झोलियां

अज कालका माई आई है
मां भवना वाली लाई है
मां ने रचना आज सजाई है
मां दर्शन देती ....जय हो
मां दर्शन देती हर पल में
मां मेहरा करती हर पल में..............भर लो झोलियां

59

जय माता की

हे मां मुझको ऐसा घर दे, जिसमें तुम्हारा मन्दिर हो

ज्योत जले दिन रैन तुम्हारी, तुम मन्दिर के अन्दर हो

एक कमरा हो जिसमें तुम्हारा

आसान माता लगा रहे

हर पल हर क्षण भगतों का वहां

आना जाना लगा रहे

छोटे बड़े का मां उस घर में

एक सामान ही आदर हो – ज्योत जले

हर प्राणी उस घर का माता

तेरी महिमा गाता रहे

तू रख्खे जिस हाल में दाती

हर पल शुक्र मनाता रहे

कभी न हिम्मत हारे हम मां

चाहे समा भयंकर हो........ज्योत जले

तेरे दर से कोई सवाली

कभी न खाली जाए मां

चैन में पाऊँ तब तब दाती

जब जब तुम्हें रिझाऊँ मां

मुझको वो वरदान दे मैया

तुम तो दया का सागर हो ....ज्योत जले

हे मां हे मां हे मां हे मां

हे मां हे मां हे मां हे मां

60

जय माता की

जे मेरे ते कृपा करेगी, मेरी खाली झोली भरेगी मां

ते में देवा सत चुन्नियां, में देवाँ सत चुन्निया

मै देवाँ सत चुन्निया मै देवाँ सत चुन्निया

जे सुतड़े भाग जगावेगी, मेरे बेड़े लाल खिड़ावेगी

ते मैं देवाँ सत चुन्निया, मै देवाँ सत चुन्निया

तेरी बहुत सुनी बड़माई मां, मैने आस तेरे ते लाई मां

मेरा करदे दूर अंधेरा मां, मैं फडया ऐ लड़ तेरा मां

जे मन्ने दी अरदास मेरी, हर पूरी करेगी आस मेरी

ते मैं देवां सत चुन्निया, मैं देवां सत चुन्नियां

तेरे द्वार ते जो भी आया मां, ओने मुह मंगया फल पाया मां

तू दाती मेहरां वाली है, ना मोड़े सवाली खाली है

जे चिन्ता मेरी हर लेगी..............

मां नजर सबल्ली कर देगी ....

जे चिन्ता मेरी हर लेगी, मां नजर सवल्ली कर देगी – तो मैं देवां

एक तुइयो प्यारी जग तो मां, कड लैंदी बलदी अग तो मां

तेरे वरगा माइये कोई नहीं, सानू होर किसे थां कोई नहीं

जे अजु मेरे रूक जावन ....

माइये नी अखड़े मुक जावन............

मेरा चोला करदे साफ नी मां, मेरी भुलचुक करदे माफ नी मां

मेरी विनती मां मंजूर करीं, मुझे चरणों तो न दूर करीं

जे मेहर दे छिट्टे पावेगी.........
मेरी बिगड़ी मां बनावेगी.........
मैं होर किसे न कहना है जो लैना तैथों लैना है
मेरी डोर हवाले तेरे मां, कर सपने पूरे मेरे मां
जे बेड़ै बन्ने ला देगी............
कंटयां पे फूल बना देगी...........

61

जय माता की

जेड़े मैया दा जयकारा लान्दे ने , भव तर दे

जड़े बाबा दा जयकारा लान्दे ने , भव तर दे

जेड़े जय माता दी बुलान्दे ने , भव तर दे

प्रेम से बोलो जय माता दी

सब मिल बोलो जय माता दी   जय माता दी.......................

ओ मैया मेहर जिन्हा दे करदे

ओ तो मौजा ही मौजा करदे

धर उसदा ध्यान, लैंके प्यारी मां दा नाम

दिन रात जो मां नू मनान्दे ने, भव तर दे

ओ ऋद्धि सिद्धियां दी दाता माई

ओ साड़ी करम विधाता माई

जेड़े अको मां के दर, पल्ला मैया दा पकड़

ओदे दर ते शीश झुकान्दे ने, भव तर दे

ओ मां दे द्वार दी चर्चा है जग ते

ओ मां दी मेंहर दी बरखा है सब ते

धर उस वल मन, सच्ची लाके लगन

मां दे नाम इच जो रंग जान्दे ने , भव तर दे

ओ आके झोली मां दे दर ते फैला लो

मुंह मंगया मैया तों वर पालो

धर मन इच ध्यान, करें मां दा गुणगान

जेड़े दिल मैया नू बसान्दे ने
जेड़े दिल मैया नू देन्दे, भव तर दे
जयकारा मौना वाली दा
बोल सांचे दरबार को जय

62

जय माता की

संगता दर ते आइयां, मां सुन के तेरी बहआईयां
तू मेहर दा मीं बरसाये, ते खैर झोली विच पा दे
ते खैर झोली विच पाये ....मां
एस हथ्थों या भावें ओस हथ्थों या

लट लट बलदी लाट तेरी मां करां कि वरनन लीला
करां कि बरनन लीला मां तेरी करां कि बरनन लीला
जिसदा जग ते वस न चलया उसदा ज्योंत वसीला
उसदा ज्योत वसीला मां मेरी उसदा ज्योत वसीला
तू लीला फिर दिखलाये ते भक्ति झोली पादे
ते भक्ति झोली पादे – मां
असी न मंगदे हीरे मोती, न कोई मिश्री मेवा
न कोई मिश्री मेवा माइये न कोई मिश्री मेवा
मां जे साडी लगन है सच्ची रहीं तू अंगसंग देवा
तू दुःख दे मेघ उड़ाये ते चानन पल्ले पा दे
ते चानन पल्ले पा दे ....मां
मूढ़ मती अन्जान असी हां, तू मैया गुणवन्ती
तू मैया गुणवन्ती देवा तू मैया गुणवन्ती
जद जद सदिये तुरत ही आवे लैके शेर बसन्ती
बच्च्यां नू तू तारन आवे लैके शेर बसन्ती
लैके शेर बसन्ती माइये लैके शेर बसन्ती
तेरे दर ते शीश झुकावें, तू शरणी अपनी ला ले
तू शरणी अपनी लाले ....मां

63

जय माता की

जेड़े पासे जाइये सानू तू दिसदी
तू दिसदी नी माए तू दिसदी
सूरज चन्द सितारेया नजारां इच
तेरा महारानिये वजूद दिसदा
उच्चया पहाड़ा विच जंगला ते शहरा इच
नाम तेरा हरदम मौजूद दिसदा
सागर दी लहरा दे नदिया दी धारा दे
डुबकी भी जिथ्थे किथ्थे लाइये माइये सानू तू दिसदी
खेताँ खलिहाना विच ठंडिया ब्यारा विच
औंदी है सुगन्ध माए तेरे नाम दी
तुझ्यों पूजा भक्ति है तुझ्यों महाशक्ति है
तू ही माए मात्रा है चारों धाम दी
फुल्लों और कलियों नू श्रद्धा दे नाल गुंध
माला जय तेरी मां बनाइये, माइये सानू तूं दिसदी
सतियों दे तप विच जपियों दे जप विच
हवन दी आहुति इच नूर तेरा है
साधु सन्यासी विच बारह मां राशि विच
नौ ही ग्रहों विच सरूर तेरा है
अन्दरा दी आंखां खोल मन दे मन्दरा विच
जद तेरी ज्योत मां जगाइये, माइये सानू तू दिसदी

64

जय माता की

तेरे कोलों मंगना मां तेरे कोलों मंगना
सेवा दार तेरा मैया रवे कोई तंग ना
तेरे रंग रंगना मां तेरे रंग रंगना

तेरी तस्वीर दाती दिल विच बस जाए
रोम रोम विच मेरे नाम तेरा रम जाए
तेरे रंग उत्ते चढ़े होर कोई रंग ना

दुनिया दे रंग छूटे अपना मां संग दे
मंगना ना बाकी रह जाए ऐसा मैनु वर दे
तेरे मंगते नू दाती मंगने दा ढंग ना

तेरा दर छड के मैं होर दर जावां ना
तेरे सिमरन बिना होर गीत गावां ना
निर्धन मंगते नू मां लोढ़ किसी धन ना

तेरे घर विच दाती रहगता दा काल ना
हल न होवे जेढ़ा ऐसा कोई सवाल ना
विनती करूं ए मैया छूटे तेरा संग ना

65

जय माता की

भोले भाले मुखड़े दा जवाब नहीं

भली जादी मां दी किसी कोलों ताव नहीं

नजर भी मां नजारा भी मां

चन्दा भी मां सितार भी मां

सागर भी मां किनारा भी मां

एदी रहमत दा किसी नू हिसाब नहीं

धरती भी मां आकाश भी मां

आस भी मां ते पास भी मां

मेरा ता विश्वास भी मां

मैं तेरा हां दास भी मां.............

केड़ा कहदां भगतां मां दे कोलों लाभ नहीं

गुल भी मां गुलजार भी मां

सुर भी मां ते सितार भी मां

तीर भी मां तलवार भी मां

मेरा तां संसार भी मां.............

ए दी शक्ति दा जगत जवाब नहीं

66

जय माता की

(हां) दुष्टों दा दिल धक धक करदा

ते ठंड भगतां नू पैंदी ....

शेरां वाली मां जगदम्बे जदों शेर पे वैंदी

जय जय जय मां ....

जद मेरी दाती करे सवारी देके शेर नू धापी

बड़ जान्दै बुकला दे अन्दर मार के चिख्खां पापी

थर थर कंपदे विच बुकलां दे –जय मां–

थर थर कंपदे विच बुकलां दे, सूरत कुछ न रहन्दी...........

शेरां वाली मां जगदम्बे जदों शेर ये बैंदी

लैके मां नू शेर चले जद धरती डगमग डोले

वेख वेख के शक्ति मां दो हर कोई जै जै बोले

गरजे शेर जदों मैया दा ....जय मां

गरजे शेर जदों मैया दा सुन के मौत डरेन्दी..........

शेरां वाली मां जगदम्बे

भगतां लइ जल रूप कहावे दुष्टां लइ मां ज्वाला

करे शेर ते जद सवारी लेके नेजा भाला

भई लख लख दे सिर पैन धरती पे .... जय मां

भई लख लख दे सिर पैन धरती पे, तेज जिधर भी पैंदी –

शेरां वाली मां जगदम्बे जदों शेर पे बैंदी –

67

जय माता की

झूठ साथी
क्रोध नाती
सच दुश्मन
मैं महान

चलो मां के दर जाए हम
चलो जैकार लगाएं हम

जिसके हृदय में राम नाम रंग है
उसको हर घडी आनंद ही आनंद है

जिसको सत्संग हर दम पसंद है
उसको हर घडी आनंद ही आनंद है

राम में भोले और भोले में राम
भक्त हनुमान जप्ते दोनों के नाम
जिसके दिल में बसत श्री राम हैं
उसके तनमन में उमंग ही उमंग है

राम नाम का लेके सहारा
तर जायेगा भव से पारा
जिसके तनमन में राम ही राम हैं
उसके जीवन में आराम ही आराम है
राम की शरणी जो आया
उसने हर सुख जीवन में पाया
राम जी की रजा में जो रजामंद है
उसको हर घडी आनंद ही आनंद है

68

जय माता की

महा शिवरात्रि आयी,

सुखो की दात्रि आयी,

मगन मन डोले रे,

कहो बम भोले रे,

बबम बम भोले रे,

कहो बम भोले रे।।

जो भोले का जाप करे,

पाप का पश्चाताप करे,

दुःख से सुख का मिलाप करे,

भेद यह खोले रे,

कहो बम भोले रे,

बबम बम भोले रे,

कहो बम भोले रे।।

शिवरात्रि का व्रत रखे जो,

तीनो प्रहर जो पूजे इनको,

शुभ आशीष ये देते उसको,

शुभ आशीष ये देते उसको,

मधु रस घोले रे,

कहो बम भोले रे,

बबम बम भोले रे,

कहो बम भोले रे।।

महा शिवरात्रि आयी,

सुखो की दात्रि आयी,

मगन मन डोले रे,

कहो बम भोले रे,

बबम बम भोले रे,

कहो बम भोले रे।।

69

जय माता की

मां ज्वाला देवी चालीसा

।।दोहा।।

शक्ति पीठ मां ज्वालपा धरूं तुम्हारा ध्यान ।
हृदय से सिमरन करूं दो भक्ति वरदान ।।

सुख वैभव सब दीजिए बनूं तिहारा दास ।
दया दृष्टि करो भगवती आपमें है विश्वास ।।

।।चौपाई।।

नमस्कार हे ज्वाला माता । दीन दुखी की भाग्य विधाता ।।
ज्योति आपकी जगमग जागे । दर्शन कर अंधियारा भागे ।।

नव दुर्गा है रूप तिहारा । चौदह भुवन में दो उजियारा ।।
ब्रह्मा विष्णु शंकर द्वारे । जै मां जै मां सभी उच्चारे ।।

ऊंचे पर्वत धाम तिहारा । मंदिर जग में सबसे न्यारा ।।
काली लक्ष्मी सरस्वती मां । एक रूप हो पार्वती मां ।।

रिद्धि–सिद्धि चंवर डुलावें । आ गणेश जी मंगल गावें ।।
गौरी कुंड में आन नहाऊं । मन का सारा मैल हटाऊं ।।

गोरख डिब्बी दर्शन पाऊं । बाबा बालक नाथ मनाऊं ।।
आपकी लीला अमर कहानी । वर्णन कैसे करें ये प्राणी ।।

राजा दक्ष ने यज्ञ रचाया । कंखल हरिद्वार सजाया ।।
शंकर का अपमान कराया । पार्वती ने क्रोध दिखाया ।।

मेरे पति को क्यों ना बुलाया । सारा यज्ञ विध्वंस कराया ।।
कूद गई माँ कुंड में जाकर । शिव भोले से ध्यान लगाया ।।

गौरा का शव कंधे रखकर चले नाथ जी बहुत क्रोध कर ।।
विष्णु जी सब जान के माया । चक्र चलाकर बोझ हटाया ।।

अंग गिरे जा पर्वत ऊपर । बन गए मां के मंदिर उस पर ।।
बावन है शुभ दर्शन मां के । जिन्हें पूजते हैं हम जा के ।।

जिह्वा गिरी कांगड़े ऊपर । अमर तेज एक प्रगटा आकर ।।
जिह्वा पिंडी रूप में बदली । अनसुइया गैया वहां निकली ।।

दूध पिया मां रूप में आके । घबराया ग्वाला वहां जाके ।।
मां की लीला सब पहचाना । पाया उसने वहीं ठिकाना ।।

सारा भेद राजा को बताया । ज्वालाजी मंदिर बनवाया ।।
चंडी मां का पाठ कराया । हलवे चने का भोग लगाया ।।

कलयुग वासी पूजन कीना । मुक्ति का फल सबको दीना ।।
चौंसठ योगिनी नाचें द्वारे । बावन भैरों हैं मतवारे ।।

ज्योति को प्रसाद चढ़ावें । पेड़े दूध का भोग लगावें ।।
ढोल ढप्प बाजे शहनाई । डमरू छैने गाएं बधाई ।।

तुगलक अकबर ने आजमाया । ज्योति कोई बुझा नहीं पाया ।।
नहर खोदकर अकबर लाया । ज्योति पर पानी भी गिराया ।।

लोहे की चादर थी ठुकवाई । जोत फैलकर जगमग आई ।।
अंधकार सब मन का हटाया । छत्र चढ़ाने दर पर आया ।।

शरणागत को मां अपनाया । उसका जीवन धन्य बनाया ।।
तन मन धन मैं करुं न्यौछावर । मांगूं मां झोली फैलाकर ।।

मुझको मां विपदा ने घेरा । काम क्रोध ने लगाया डेरा ।।
सेज भवन के दर्शन पाऊं । बार–बार मैं शीश नवाऊं ।।

जै जै जै जगदम्ब ज्वालपा । ध्यान रखेगी तू ही बालका ।।
ध्यानु भगत तुम्हारा यश गाया । उसका जीवन धन्य बनाया ।।

कलिकाल में तुम वरदानी । क्षमा करो मेरी नादानी ।।
शरण पड़े को गले लगाओ । ज्योति रूप में सन्मुख आओ ।।

।।दोहा।।

रहूं पूजता ज्वालपा जब तक हैं ये स्वांस ।
"ओम" को दर प्यारा लगे तुम्हारा ही विश्वास ।।

70

जय माता की

राम लला मोरे राम

राम लला मोरे राम लला,
राम लला मोरे राम लला,
राखे रहियो मोरी खबरिया,
मोरे राम लला,
राम लला मोरे राम लला,
राम लला मोरे राम लला,
राखे रहियो मोरी खबरिया,
मोरे राम लला

ओ सिया के संवरिया,
मोरे राम लला,
राखे रहियो मोरी खबरिया,
मोरे राम लला,
राखे रहियो मोरी खबरिया,
मोरे राम लला,
मोरे राम लला

थोड़ी देर थाहर जा रे मन,
राम नाम में राम जा,
मोह माया में ऐसा उलझा,
प्रभु को कभी ना समझा,
थोड़ी देर थाहर जा रे मन,

राम नाम में रम जा,

मोह माया में ऐसा उलझा,

प्रभु को कभी ना समझा,

पछतावा ही हाथ लगेगा,

पछतावा ही हाथ लगेगा,

बीत जाय उमरिया,

मोरे राम लला,

राखे रहियो मोरी खबरिया,

मोरे राम लला,

राखे रहियो मोरी खबरिया,

मोरे राम लला,

मोरे राम लला

राम नाम से सांचा कोई,

दूजा नहीं है नाम,

मन के मंदिर में बसाया,

जय जय श्री राम,

राम नाम से सांचा कोई,

दूजा नहीं है नाम,

मन के मंदिर में बसाया,

जय जय श्री राम,

हर सूरत में राम दिखेंगे,

हर सूरत में राम दिखेंगे,

जब बदली मोरी नजरिया,

मोरे राम लला,

राखे रहियो मोरी खबरिया,

मोरे राम लला,

राखे रहियो मोरी खबरिया,

मोरे राम लला,

मोरे राम लला

राखे रहियो मोरी खबरिया,

मोरे राम लला,

ओ सिया के संवरिया,

मोरे राम लला,

राखे रहियो मोरी खबरिया,

मोरे राम लला,

राखे रहियो मोरी खबरिया,

मोरे राम लला,

मोरे राम लला

राम लला मोरे राम

71

जय माता की

शिव जी बिहाने चले, पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम, संग संग बाराती चले,
ढोलवा बजाई के, घोड़वा दौड़ाई के हो राम,
शिव जी बिहाने चलें, पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

हिमगिरि ने गौरा के ब्याह की, लगन पत्रिका लिखवाई,
नारद जी के हाँथ वो चिट्ठी, ब्रह्मा जी तक पहुचाई,
ब्रह्मा जी ने लगन पत्रिका, सबको बाँच सुनाई थी,
शंकर की बारात चलेंगे, सबने खुशी मनाई थी,
देवता करें तैयारी, अपनी अपनी असवारी,
लेके कैलाश चले, शंख बजाए के,
खुशियां मनाए के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें, पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

विष्णु और लक्ष्मी जी दोंनो, गरुड़ के ऊपर चढ़ आए,
दाढ़ी वाले बूढ़े ब्रह्मा, हंस सवारी ले आए,
बड़ी शान से इंदर आए, ऐरावत लेके हाँथी,
भैंसे पर यमराज विराजे, और यमदूत सभी साथी,
मस्ती में हरि गुण गाते,नारद जी खुशी मनाते,
शंकर के बने बराती, वीणा बजाई के,
तारों को सजाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें, पालकी सजाई के, भभूति रमाई के हो राम।।

शंकर के गण हुए इक्कट्ठे, बाबा को परणाम किया,
हार श्रृंगार बनाने वाला, तब सारा सामान लिया,
राख मँगाकर शमशानों से, उसकी लेप बनाई थी,
कहके उनके, तन पे भभूत चढाई थी,
बूढ़े में कुंडल वाला, बैठा था फणीयर काला,
मस्ती में झूम रहा, फणवा घुमाई के, जिह्वा हिलाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चले,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

मस्तक पे थे त्रैलोचन और, दूध का चंद्र विराज रहा,
डम डम डमरू बाजे और, त्रिशूल हाँथ में साज रहा,
भोले बाबा को पहनाई, नर मुंडो की इक माला,
बागम्बर की खाल ओढाई, और कंधे पर मृगछाला,
गंगा की धारा बहती, कलकल कल करके कहती,
बुरी नजर से इन्हें, रखना बचाई के,
मुखड़ा छुपाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

किसी की आँखे तीन तीन और, किसी के माथे एक लगी,
एक टांग पे चले कोई और, किसी के टांग अनेक लगी,
मुँह किसी का लगा पेट में, और किसी का छाती में,
कोई ऊँचा आसमान सा, कोई रेंगता धरती में,
लंबा चौड़ा मुँह खोले, बोली भयंकर बोले,

धरती गगन भर डाला, बभूति उड़ाई के,
धूम मचाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें, पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

गरुड़ के ऊपर विष्णु निकले, ब्रह्मा हंस को साथ चले,
ऐरावत पर इंदर बैठे, भैंसे पर यमराज चले,
बाकी देवता भी ले चल रहें, अपनी अपनी असवारी,
भोले शंकर ने देखा, हो गई बारात की तैयारी,
नंदी पर आप विराजे, डमरू त्रिशूल को साजे,
खुशियों में नंदी नाचे, सिंगवा हिलाइके,
पूँछवा घुमाइके हो राम, ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

आगे आगे शंकर बाबा, पीछे भूत परेत चले,
ब्रह्मा विष्णु धर्मराज और, इंदर गरुड़ समेत चले,
ढोल नगाड़े शंख बजे और, बाज रही थी शहनाई,
चलते चलते शंकर की बारात, नगर के पास आई,

सुंदर स्थान निहारा, शिवजी ने किया इशारा,
देवता नाचन लागे, झंडे उठाइके,
बाजे बजाइके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

हिमगिर ने जब शोर सुना, पंचायत आपनी बुलवाई,
मिलजुल कर सब करे स्वागत, गौरा की बारात आई,
चले उधर पंचायत वाले, स्वागत गीत सुनाते थे,
उनसे भी आगे कुछ बच्चे, भागे दौड़े जाते थे,
दूल्हे के देखे नैना, भूतों प्रेतों की सेना,
बालक तो घर को भागे, होश भुलाइके,
सांस फुलाईके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

मात पिता सों बालक बोले, ये कैसी बारात आई,
लगता है के नर्क छोड़, यमदूतों की जामात आई,
जो इस ब्याह को देखेगा वो, बड़ा भाग्यशाली होगा,
पर हम कहते हैं कि सारा, नगर आज खाली होगा,
माता पिता समझावे, बच्चों को पास बुलावें,
डर को छोड़ो तुम खेलो, खुशियाँ मनाई के,
राघवेंद्र गाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

हिमगिर ने सबके स्वागत में, अपने नैन बिछाए थे,
कर विनती सम्मान सभी को, जनवासे में लाए थे,
इंद्रपुरी से जनवासा था, जहाँ उन्हें ठहराया था,
दास दासियों ने आकर, सबको जलपान कराया था,

ब्रह्मा और इंदर आए, देखके सब हरषाए,
विष्णु को माथा टेके, शीश झुकाई के,
हरि गुण गाइके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

इतने में गौरा की सखियाँ, सोने की थाली लाई,
महादेव शंकर दूल्हे की, आरती करने को आई,
उन सबने नारद से पूछा, दूल्हा कौन है बतलाओ,
बैठा है जिस जगह वही पे, हम सबको भी पहुँचाओ,
नारद की निकले हाँसी, बोले तब खाँस के खाँसी,
संग गणों को भेजा, रास्ता दिखाइके,
जरा मुस्कुराइके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

सखियों ने देखा बारात ये, नही परेतों की टोली,
भांत भाँत के रूप बनावे, तरह तरह बोले बोली,
कोई तो पीवे सूखा गाँजा, कई घोटते भाँग रहे,
छीना झपटी करते हैं, कई इक दूजे से माँग रहे,
मस्ती में झूम रहे हैं, नशे में घूम रहे हैं,
भाँग को लागे रगड़ा, सोटवा घुमाइके,
घोटवा लगाइके हो राम, ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

सखियों ने दूल्हे को देखा, लंबी दाढ़ी वाला है,
हाँथ में जिसके खप्पर डमरू, गले सांप की माला है,
जटाजूट बांधे और तन पे, जिसने राख चढ़ाई है,
बागम्बर की खाल ओढ़ने, ते मृगछाल बिछाई है,
सखियाँ जब करे इशारे, नंदी जी खड़े निहारे,
सखियों के पीछे पड़ गए, पूछनी घुमाइके,
सिंगवा हिलाइके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

जनवासे से बाहर निकली, सब सखियाँ घबराई थी,
गौरा तेरी किस्मत फूटी, उसे बताने आई थी,
पार्वती से आकर बोली, तेरा दूल्हा देख लिया,
तेरे पिता ने बस यूं समझो, तुझे नर्क में भेज दिया,
है वो शमशान का वासी, है कोई जोगी सन्यासी,
मस्ती में डूबा रहे, भाँग चढ़ाई के,
धतूरा चबाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

पार्वती ने उत्तर ऐसे, दिया सभी की बोली का,
मेरा और शंकर का रिश्ता, है दामन और चोली का,
जनम जनम की लगन यही है, माँ अपनी से कह दूंगी,
व्याह होगा तो शंकर से, अन्यथा कंवारी रह लुंगी,

गौरा की सुनकर वाणी, खुश हो गई सखी सयानी,
चलने लगी दोनो की, जय जय बुलाई के,
गीत गुनगुनाइके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

उधर गणों ने मिलकर के, शिव बाबा को तैयार किया,
इधर गौरी की सखियों ने था, गौरा का श्रृंगार किया,
महलों के प्रांगण में वेदी, सुंदर एक बनाई थी,
मंडप जब तैयार हुआ तो, फिर बारात बुलवाई थी,
देवता बाजे बजावे, शंकर डमरू खड़कावे,
भूतों की सेना चली, नाच दिखाई के,
धूम मचाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

गलियों और बारातों में थी, सचमुच भीड़ लगी भारी,
अपने अपने घर के आगे, खड़ी हो हो देखे नारी,
ब्रह्मा विष्णु इंद्र आदि को, देख सभी हरषाई थी,
पर शंकर को देख नारियाँ, घर की भीतर भागी थी,
धक धक दिल धड़कन लागे, अंग सब फड़कन लागे,
नन्हे नन्हे बच्चों को, गोद मे उठाइके,
गले से लगाइके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,

पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

गौरा की माँ ने हिमगिर को, अपने पास बुलाया था,
साखियों ने जो हाल कहा था, सब उनको समझाया था,
बोली मैं अपनी बेटी को, तबाह नही होने दूंगी,
कुँए में गिरके मर जाउंगी, ब्याह नही होने दूंगी,
इतने में हरि गुण गाते, नारद जी वीण बजाते,
पिछले जनम की कथा, बोले समझाई के,
सबको सुनाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

मण्डप में जब पहुँचे शंकर, आसन देके बिठलाया,
पहले उनकी पूजा करी फिर, पार्वती को बुलवाया,
बड़े प्रेम से हिमगिर ने, गिरजा का कन्यादान किया,
शंकर सहित बराती जितने, सबका ही सम्मान किया,
शंकर और पार्वती की, सुंदर सी जोड़ी देखी,
देवता खुश हुए, फूल बरसाइके,
जय जय बुलाई के हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

गले लगाकर बेटी को, हिमगिर मैना ने विदा किया,
पार्वती को शंकर ने, नंदी की पीठ पर बिठा लिया,
सोमनाथ की इस गाथा को, सुने वा इसका गान करें,
संकट सारे मिट जाए, शिव जी उनका कल्याण करें,
लेकर के पार्वती को, शंकर कैलाशपति को,
नंदी मस्ती में भागे, सिंगवा हिलाइके,
पूँछवा घुमाइके हो राम,
ए भैया शिव जी बिहाने चलें,
पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।

शिव जी बिहाने चले, पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम, संग संग बाराती चले,
ढोलवा बजाई के, घोड़वा दौड़ाई के हो राम,
शिव जी बिहाने चले, पालकी सजाई के,
भभूति रमाई के हो राम।।
गायक पं. सोमनाथ शर्मा।

72

जय माता दी

सीता राम

राधे श्याम

गौरी शंकर

लक्ष्मी गणेश

गोपी कृष्ण

माँ बाप

माता पिता

बहन भाई

स्त्री पुरुष

घरवाली घरवाला

स्याही दवात

झील तालाब

हानी लाभ

विधि विधान

रोटी कपड़ा

इत्यादी

दिवाली श्री राम लक्ष्मण और सीता माता के अयोध्या वापस आने पर मनाई जाती है

73

जय माता दी

राधे राधे बोल श्याम आयेंगे
आयेंगे श्याम आयेंगे
वृंदावन कहाँ दूर है
बरसाना कहाँ दूर है
सब तेरी नजर का कसूर है
राधे राधे.......

निकले का तेरी भगती का परिणाम
तेरे घर भी आयेंगे घनश्याम
बस याद कर बस फर्याद कर
ना यू जीवन बर्बाद कर
बीते दिन लौट ना आयेंगे
राधे राधे.......

ना देखे कोई धर्म करम ना जात
जाने बस भग्तो के दिल की बात
वो बस जान ले पहचान ले
इक बार वो अपना मान ले
फिर आकर गाले लगाएँगे
राधे राधे.........

लाखो में किसी एक को चुनते है
अनदर की आवाज को सुनते है

बस जान ले पहचान ले

इक बार वो अपना मान ले

फिर आकर गाले लगाएँगे

राधे राधे.........

प्रेम के आंसू जिनके बहते है

उनके तो हरि अंग संग रह्ते है

मैं भी प्यासी हु हरिदासी हु

राधा जू की खासम खास हु

सुन कर प्रभू देर ना लगायेंगे

राधे राधे........

74

जय माता दी

आरती मैया जी

मन में बसाके तेरी मूर्ति,
मन में बसाके तेरी मूर्ति
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती,
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती

तू ही सर्व मंगला तू ही भगवती,
तू ही सर्व मंगला तू ही भगवती
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती,
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती

करुणा करो कष्ट हरो चिंता मिटा दो,
आया शरण पूजूँ चरण भाग्य जगा दो
करुणा करो कष्ट हरो चिंता मिटा दो,
आया शरण पुजू चरण भाग्य जगा दो

तेरे सिवा अम्बे शिवा आसरा नहीं,
मन की जिसे बात कहे दूसरा नहीं
लाखों का तूने उद्धार है किया,

माँगा जिसने जो तुमने माँ दिया
छोटी सी मेरी थी ये मानों विनती,

मन में बसा के तेरी मूर्ति
मन में बसा के तेरी मूर्ति,
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती

भव में फंसी आज मेरी तार दो नैया,
तुझसे बड़ा माँझी कोई और ना मैया
भव में फसी आज मेरी तार दो नैया,
तुझसे बड़ा मांझी कोई और ना मैया

जिसपे तेरा हाथ उसे आंच क्यों आये,
दूर करो अब तो काले गम के साये,

दर्द की दवा तेरे पास माँ,
टूट जाये ना मेरी आस माँ
जिन्दगी दया की है भीख मांगती,

मन में बसाके तेरी मूर्ति
मन में बसाके तेरी मूर्ति,
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती

तू ही सर्व मंगला तू ही भगवती,
तू ही सर्व मंगला तू ही भगवती
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती,

मांगु तुझसे क्या में यही सोचु मैया,
जिंदगी जब तेरे नाम करदी अर्पण

सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा,
चिंता है तुझको मैया संसार की
मन बसाकर मैं तेरी मूर्ति,
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती ||

वेद तेरी महिमा गाये संत करे ध्यान,
नारद गुणगान करे छेड़े वीणा तान
वेद तेरी महिमा गाये संत करे ध्यान,
नारद गुणगान करे छेड़े वीणा तान

भक्त तेरे द्वार करते है पुकार,
भक्त ध्यानु तेरी गाये आरती
मन में बसाकर अम्बे तेरी मूर्ति,
उतारू मैं अम्बे तेरी आरती ||

75

जै माता की

तूने पानी में ज्योत जगाई रे
तेरी जय हो ज्वाला माई रे
तूने राजा दक्ष के जन्म लिया
शिव शंकर के संग ब्याह किया
ओ तू तो पार्वती कहलाई रे
तेरी जय हो ज्वाला माई रे
तूने पानी में ज्योत जगाई रे
तेरी जय हो ज्वाला माई रे
तेरे पिता ने यज्ञ रचाया था
और तुमको नहीं बुलाया था
तू तो बिना बुलाये चली आई रे
सब देवों का आह्वान हुआ
शिव शंकर का अपमान हुआ
तू तो हवन कुंड में समाई रे

76

जै माता की

माँ तू प्रेम की मूरत है

माँ तू है अनमोल, जो जाने हमारे बोल,
माँ तेरा ना कोई मोल, तू तो प्रेम की मूरत है,
माँ तू प्रेम की मूरत है ॥
चरणों की धूल हैं तेरे, डाली के फूल हैं तेरे,
काँटे हमको ना समझना, माँ बच्चे हैं हम तेरे,
हमरा चलना हमरा हंसना, सब तेरा है आधार।
माँ तू है अनमोल, जो जाने हमारे बोल,
माँ तेरा ना कोई मोल, तू तो प्रेम की मूरत है,
माँ तू प्रेम की मूरत है ॥

क्यों गम से हम घबरायें, क्यों सबसे हम शरमायें,
जब माँ तू साथ है हमारे, क्यों सबको ना बतलायें,
चाहे दुःख हो या सुख हो, तेरा करते रहें गुणगान।
माँ तू है अनमोल, जो जाने हमारे बोल,
माँ तेरा ना कोई मोल, तू तो प्रेम की मूरत है,
माँ तू प्रेम की मूरत है ॥

'हम' हैं दास तुम्हारे, तुझसे ही आस हमारी,
बिन तेरे कौन सुने माँ, तू ही आवाज हमारी,
चाहे पायल चाहे बिछिया, देना चरणों में अस्थान।
माँ तू है अनमोल, जो जाने हमारे बोल,

माँ तेरा ना कोई मोल, तू तो प्रेम की मूरत है,

माँ तू प्रेम की मूरत है ॥

माँ तू है अनमोल, जो जाने हमारे बोल,
माँ तेरा ना कोई मोल, तू तो प्रेम की मूरत है,

माँ तू प्रेम की मूरत है ॥

77

जै माता की

छोटी पड़ गई झोली तूने इतना दिया

ओ मैया तेरी रहमतों ने ये करिश्मा किया,
छोटी पड़ गई झोली तूने इतना दिया,
अपना बनाया, गले से लगाया,
दे दी हमें अपनी, ममता की छाया,
ओ मैया बुझने दिया ना, आस वाला दीया,
छोटी पड़ गई झोली, तूने इतना दिया३

पुकारा तुझे हमने, जब जिस घड़ी है,
माँ अपने भवनों से, तू चल पड़ी है,
हमें लड़खड़ाने से, पहले संभाला,
सदा माँ दुखो के, भंवर से निकाला,
माँ तेरे हाथ में, जब मेरा हाथ है,
छू ले मुझको कहाँ, दुःख की औकात है,
ओ मैया तेरी दया का, हमने अमृत पिया,
छोटी पड़ गई झोली, तूने इतना दिया३

हाथ तेरा सदा माँ, सर पे रहे,
सर हमेशा माँ तेरे, दर पे रहे,
ओ मैया हर साँस हमने, नाम तेरा लिया,
छोटी पड़ गई झोली, तूने इतना दिया३

78

जै माता की

आया सावन बड़ा मन भावन

रिमझिम सी पड़े फुहार

आया सावन बड़ा मन भावन

आया सावन, बड़ा मन भावन,

रिमझिम सी पड़े फुहार,

राधा झूल रही कान्हा संग में॥

चले पुरवाई, घटा जब छाई,

बागों में आई बहार॥

राधा झूल रही कान्हा संग में॥

घर आँगन में, वृंदावन में,

सखियाँ गाएं मल्हार॥

राधा झूल रही कान्हा संग में॥

ऋतु आई प्यारी, झूलें नर नारी,

आया है तीज त्यौहार॥

राधा झूल रही कान्हा संग में॥

बालों में गजरा, अँखियों में कजरा,

आजा प्यारी करें श्रृंगार॥

राधा झूल रही कान्हा संग में॥
झूलें ब्रज बाला, झूलायें गोपाल,
देखें गोकुल के नर नार॥

राधा झूल रही कान्हा संग में॥

79

जै माता की

शिव शंकर का जब क्रोध बड़ा
भोले बाबा का जब क्रोध बड़ा
कांधे पे सती उठाई रे
मईया जहां तुम्हारे अंग पड़े
मईया वहाँ वहाँ तेरे मन्दिर बने
तू तो शक्ति पीठ कहलाई रे

मईया जहाँ तुम्हारे केश गिरे
वहाँ महामाई कहलाई रे
मईया जहाँ तुम्हारी जीभ गिरी
तू तो मां ज्वाला कहलाई रे
मईया जहाँ तुम्हारे नैन गिरे
तू तो मां नैना कहलाई रे
जै भोले बाबा की

आज शाम को करीब छः बजे वनखण्डी
महादेव के मन्दिर से महंत गिरी जी
मईया जी के मन्दिर में पधारे थे।
महन्त जी एक घंटे से ज्यादा मन्दिर
में रहे। उन्होंने आर्शीवाद दिया आगे
आने वाले समय सब कुछ बहुत अच्छा होगा।

हर हर महादेव।

80

जै माता की

भोले बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे,
भोले बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे।

मैं तो लाई जल का लोटा,
वो तो गंगा से प्यार कर बैठे,
भोले बाबा कमाल कर बैठे,
मेरे बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे।

मैं तो लाई घिस के चंदन,
वो तो चंदा से प्यार कर बैठे,
भोले बाबा कमाल कर बैठे,
मेरे बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे।

मैं तो लाई फूलों की माला,
वो तो नागों से प्यार कर बैठे,
भोले बाबा कमाल कर बैठे,
मेरे बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे।

मैं तो लाई मेवा मिश्री,
वो तो भंगिया से प्यार कर बैठे,
भोले बाबा कमाल कर बैठे,
मेरे बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे।

भोले बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे,
भोले बाबा कमाल कर बैठे,
गौरा मैया से प्यार कर बैठे।

81

जै माता की

मैया मैया बोल नैया पार हो जाएगी,
मैया मैया बोल नैया पार हो जाएगी,
पार हो जाएगी, किनारे लग जाएगी,
मैया मैया बोल नैया पार हो जायेगी।

जिसको कहता तू मेरा मेरा
साथ नहीं देगा वो जग में तेरा,
स्वार्थी है दुनिया किनारे लग जाएगी,
मैया मैया बोल नैया पार हो जायेगी।

दुनिया के आगे कुछ नहीं कहना,
तेरे रोने से वहां कुछ नहीं होना,
रो रो के कहोगे तो हँस के उड़ाएगी,
मैया मैया बोल नैया पार हो जायेगी।

अपनी लगन मईया रानी से लगा ले,
अम्बे रानी को तू अपना बना ले,
तेरी ये लगन ऐसा रंग ले आएगी,
मैया मैया बोल नैया पार हो जायेगी।

मैया मैया बोल नैया पार हो जाएगी,
मैया मैया बोल नैया पार हो जाएगी,
पार हो जाएगी, किनारे लग जाएगी,
मैया मैया बोल नैया पार हो जायेगी।

82

जै माता की

माँ तुम हो, माँ तुम हो

तेरे दरबार पे, माँ जो भी कोई आएगा,
वो जो माँगेगा, वो ही तुझसे पायेगा,
सच्ची श्रद्धा से चल कर आने वाले का,
बिगड़ा हुआ मुक्कदर माँ संवर जाएगा,
सोये भाग्य जगाने वाली,
मेरे कष्ट मिटाने वाली,
माँ तुम हो, माँ तुम हो,
माँ तुम ही तो हो।
एक तुम हो, बस तुम हो,
सिर्फ तुम ही तो हो।

मेरी चिंता हरने वाली, मेरा दामन भरने वाली,
माँ तुम हो, माँ तुम हो,
माँ तुम ही तो हो,
एक तुम हो, बस तुम हो,
सिर्फ तुम ही तो हो।

तुझ सा दयालू माँ, इस सृष्टि में,
एक से हो जिस दृष्टि में, और ना कोई,
निर्मल ममता की रस धारा, मैया तुम हो,
अमर अनंता, अपरमपारा, मैया तुम हो,

धन वैभव सुख देने वाली,

दु:ख सारे ही हरने वाली,

माँ तुम हो, माँ तुम हो,

माँ तुम ही तो हो,

एक तुम हो, बस तुम हो,

सिर्फ तुम ही तो हो।

पारस मणियों से कहीं बढ़ के, चरण तुम्हारे,

जिनको छूकर हो गए कुंदन, करम हमारे,

तेरी रहमत की माँ जबसे, मिल गई छाया,

दूर हुई बेचौनी मन की, चौन है पाया,

फूल, काँटों को कर देने वाली,

मनवांछित वर देने वाली,

माँ तुम हो, माँ तुम हो,

माँ तुम ही तो हो,

एक तुम हो, बस तुम हो,

सिर्फ तुम ही तो हो।

सोये भाग्य जगाने वाली,

मेरे कष्ट मिटाने वाली,

माँ तुम हो, माँ तुम हो,

माँ तुम ही तो हो।

एक तुम हो, बस तुम हो,

सिर्फ तुम ही तो हो।

मेरी चिंता हरने वाली, मेरा दामन भरने वाली,

माँ तुम हो, माँ तुम हो,
माँ तुम ही तो हो,
एक तुम हो, बस तुम हो,
सिर्फ तुम ही तो हो।

83

जै माता की

कैसे बनी कैसे बनी,
मैया की लाल चुनरी कैसी बनी,
ये चुनरी विष्णु ने बनाई,
गोटा किनारी लक्ष्मी ने लगाई,
ऐसे बनी हो रामा ऐसे बनी,
मैया की लाल चुनरी ऐसे बनी।

ये चुनरी राम ने बनाई,
गोटा किनारी सीता ने लगाई,
ऐसे बनी हो रामा ऐसे बनी,
मैया की लाल चुनरी ऐसे बनी।

ये चुनरी भोले ने बनाई,
गोटा किनारी गौरा ने लगाई,
ऐसे बनी हो रामा ऐसे बनी,
मैया की लाल चुनरी ऐसे बनी।

ये चुनरी कान्हा ने बनाई,
गोटा किनारी राधा ने लगाई,
ऐसे बनी हो रामा ऐसे बनी,
मैया की लाल चुनरी ऐसे बनी।

ये चुनरी लांगुर ने बनाई,
गोटा किनारी भक्तों ने लगाई,
ऐसे बनी हो रामा ऐसे बनी,
मैया की लाल चुनरी ऐसे बनी।

84

जै माता की

अपने भगत से कितना मां प्यार करती है
रहती है पहाड़ो में पर ध्यान रखती है।

जब भी पुकारोगे मां दौड़ कर आये
चांदी का सिंहासन मां छोड़ कर आये
मझधार में हो नैया मां पार करती है

हम मांगते रहते वो भेजती रहती
भगतो की हालत को मां देखती रहती
भगतों की खाली झोली हर बार भरती है

कर्जा तुम्हारा मां कैसे उतरेंगे
मां तेरी सेवा में जीवन गुजारेंगे
गर्दन झुकी है मेरी आँखें बरसती है ।

अपने भगत से कितना मां प्यार करती है

85

जै माता की

तेरी उतारू नजरिया ओ रिद्धि सिद्धि के सांवरिया
रिद्धि के सांवरिया सिद्धि के सांवरिया
तेरी उतारू नजरिया

माथे पर है मुकुट विराजे
घर आंगन शुभ लाभ है साजे
मूषक घुमावे नगरिया ओ रिद्धि सिद्धि के सांवरिया
तेरी उतारू नजरिया

हे गणराज गजानन आओ
लड्डूओ का तुम भोग लगाओ
भक्तों से भरी है नगरिया ओ रिद्धि सिद्धि के सांवरिया
तेरी उतारू नजरिया

एकदंत दयावंत चार भुजा धारी
हे शिव नंदन गोरा हितकारी
ले लो हमारी खबरिया ओ रिद्धि सिद्धि के सांवरिया
तेरी उतारू नजरिया

86

जै माता की

बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की

केसरिनंदन बलधारी की,
केसरिनंदन बलधारी की,
मारुतिनंदन उपकारी की,
मारुतिनंदन उपकारी की

आओ करें सेवा आज पवनसुत महाबली की,
आओ करें सेवा आज पवनसुत महाबली की

बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की

अपने कपीस को मन में बसा के,
अपने कपीस को मन में बसा के,
निस करो पूजन दर पे आके,
निस करो पूजन दर पे आके

अपने कपीस को मन में बसा के,
निस करो पूजन दर पे आके,

आओ शरण सुबह–शाम पवनसुत महाबली की,
आओ शरण सुबह–शाम पवनसुत महाबली की

बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की

संकट–मोचन नाम जो ध्यावे,
संकट–मोचन नाम जो ध्यावे,
संकट उसके पास ना आवे,
संकट उसके पास ना आवे

महिमा गाएँ दिन–रात पवनसुत महाबली की,
महिमा गाएँ दिन–रात पवनसुत महाबली की

बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की,
बोलो सदा जयकार पवनसुत महाबली की

87

जै माता की

लगन तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा,
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जाएगा,

कभी दुनियाँ से डरते थे, छुप छुप याद करते थे,
लो अब परदा उठा बैठे, जो होगा देखा जाएगा,
लगन तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा,
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जायेगा,

कभी डर था दुनियाँ , हमें बदनाम कर देगी,
शर्म अब बेच खा बैठे, जो होगा देखा जाएगा,
लगन तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा,
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जायेगा,

दीवाने बन गए तेरे तो फिर, दुनियाँ से क्या मतलब,
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जायेगा,
लगन तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा,
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जायेगा,

जै माता की

श्री राम स्तुति – श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन – अर्थसहित

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणम्।

नवकंज–लोचन कंज–मुख कर,–कंज पद–कंजारुणम्॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन – हे मन, कृपालु (कृपा करनेवाले, दया करनेवाले) भगवान श्रीरामचंद्रजी का भजन कर

हरण भवभय दारुणम्। – वे संसार के जन्म–मरण रूप दारुण भय को दूर करने वाले है– दारुणः कठोर, भीषण, घोर (**frightful, terrible**) नवकंज–लोचन – उनके नेत्र नव–विकसित कमल के समान है कंज–मुख – मुख कमल के समान हैं कर–कंज – हाथ (कर) कमल के समान हैं पद–कंजारुणम॥ – चरण (पद) भी कमल के समान हैं

कंदर्प अगणित अमित छबि, नव नील नीरज सुन्दरम्।

पटपीत मानहुं तड़ित रूचि–शुची, नौमि जनक सुतावरम्॥

कंदर्प अगणित अमित छबि – उनके सौंदर्य की छ्टा अगणित (असंख्य, अनगिनत) कामदेवो से बढ़कर है

नव नील नीरज सुन्दरम् – उनका नवीन नील नीरज (कमल, सजल मेघ) जैसा सुंदर वर्ण है

पटपीत मानहुं तड़ित रूचि–शुची पीताम्बर मेघरूप शरीर मानो बिजली के समान चमक रहा है

नौमि जनक सुतावरम् – ऐसे पावनरूप जानकीपति श्रीरामजी को मै नमस्कार करता हूँ

भजु दीन बन्धु दिनेश, दानव दैत्यवंश निकन्दनम्।

रघुनन्द आनंदकंद कोशल, चन्द दशरथ नन्दनम्॥

भजु दीन बन्धु दिनेश – हे मन, दीनो के बंधू, सुर्य के समान तेजस्वी

दानव दैत्यवंश निकन्दनम् – दानव और दैत्यो के वंश का नाश करने वाले

रघुनन्द आनंदकंद कोशल चन्द – आनन्दकंद, कोशल–देशरूपी आकाश मे

निर्मल चंद्र्मा के समान

दशरथ नन्दनम् – दशरथनंदन श्रीराम (रघुनन्द) का भजन कर

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु, उदारु अङ्ग विभूषणम्।

आजानुभुज शर चापधर, सङ्ग्राम–जित–खर दूषणम्॥

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु–जिनके मस्तक पर रत्नजडित मुकुट, कानो मे कुण्डल, मस्तक पर तिलक और

उदारु अङ्ग विभूषणम् –प्रत्येक अंग मे सुंदर आभूषण सुशोभित हो रहे है

आजानुभुज –जिनकी भुजाए घुटनो तक लम्बी है और

शर चापधर –जो धनुष–बाण लिये हुए है.

सङ्ग्राम–जित–खर दूषणम् –जिन्होने संग्राम मे खर–दूषण को जीत लिया है

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।

मम ह्रदयकंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम्॥

इति वदति तुलसीदास –तुलसीदासजी प्रार्थना करते है कि

शंकर शेष मुनि मन रंजनम् –शिव, शेष और मुनियो के मन को प्रसन्न करने वाले

मम ह्रदयकंज निवास कुरु –श्रीरघुनाथजी मेरे ह्रदय कमल मे सदा निवास करे जो

कामादि खलदल गंजनम् –कामादि (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह) शत्रुओ का नाश करने वाले है

मनु जाहीं राचेउ मिलिहि सो बरु, सहज सुन्दर साँवरो।

करुना निधान सुजान सीलु, सनेहु जानत रावरो॥

मनु जाहीं राचेउ मिलिहि सो बरु –जिसमे तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है, वही वर (श्रीरामचंद्रजी) तुमको मिलेगा

सहज सुन्दर साँवरो –वह स्वभाव से सहज, सुंदर और सांवला है

करुना निधान सुजान सीलु –वह करुणा निधान (दया का खजाना), सुजान (सर्वज्ञ, सब जाननेवाला), शीलवान है

सनेहु जानत रावरो –तुम्हारे स्नेह को जानता है

एही भांति गोरी असीस सुनी, सिय सहित हिय हरषीं अली।

तुलसी भावानिह पूजी पुनि–पुनि, मुदित मन मंदिर चली॥

सिय सहित हिय हरषीं अली –जानकीजी समेत सभी सखियाँ ह्रदय मे हर्षित हुई

एही भांति गोरी असीस सुनी –इस प्रकार श्रीगौरीजी का आशीर्वाद सुनकर

(इस प्रकार श्रीगौरीजी का आशीर्वाद सुनकर जानकीजी समेत सभी सखियाँ ह्रदय मे हर्षित हुई)

तुलसी भावानिह पूजी पुनि–पुनि –तुलसीदासजी कहते है, भवानीजी को बार–बार (पुनि–पुनि) पूजकर

मुदित मन मंदिर चली –सीताजी प्रसन्न मन से राजमहल को लौट चली।

॥सियावर रामचंद्र की जय॥

89

जै माता की

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन – श्री राम आरती

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज–लोचन कंज–मुख, कर–कंज पद–कंजारुणम्॥

कंदर्प अगणित अमित छबि, नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुं तड़ित रूचि–शुची, नौमि जनक सुतावरम्॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणम्।

भजु दीन बन्धु दिनेश, दानव दैत्यवंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनंदकंद कोशल चन्द, दशरथ नन्दनम्॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणम्।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु, उदारु अङ्ग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चापधर, सङ्ग्राम–जित–खर दूषणम्॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणम्।

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम ह्रदयकंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम्॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणम्।

मनु जाहीं राचेउ मिलिहि सो बरु, सहज सुन्दर साँवरो।

करुना निधान सुजान सीलु, सनेहु जानत रावरो॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।

एही भांति गोरी असीस सुनी, सिय सहित हिय हरषीं अली।

तुलसी भावानिह पूजी पुनि–पुनि, मुदित मन मंदिर चली॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।

जानी गौरी अनुकूल सिय, हिय हरषु न जाइ कहि।

मंजुल मंगल मूल बाम, अंग फरकन लगे॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।

॥सियावर रामचंद्र की जय॥

90

जै माता की

श्री राम जन्म

भए प्रगट कृपाला, दीनदयाला,

कौसल्या हितकारी।

हरषित महतारी, मुनि मन हारी,

अद्‌भुत रूप बिचारी॥

भए प्रगट कृपाला – कृपालु प्रभु प्रकट हुए

दीनदयाला – दीनों पर दया करने वाले

कौसल्या हितकारी – कौसल्याजी के हितकारी

हरषित महतारी – माता हर्ष से भर गई

मुनि मन हारी – मुनियों के मन को हरने वाले

अद्‌भुत रूप बिचारी – उनके अद्‌भुत रूप का विचार करके

जब कृपा के सागर, कौशल्या के हितकारी, दीनदयालु प्रभु प्रकट हुए, तब उनका अद्‌भुत स्वरुप देखकर माता कौशल्या परम प्रसन्न हुई।

जिन की शोभा को देखकर मुनि लोगों के मन मोहित हो जाते हैं, उस स्वरूप का दर्शन कर माता हर्ष से भर गई।

लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा,

निज आयुध भुजचारी।

भूषन बनमाला, नयन बिसाला,

सोभासिंधु खरारी॥

लोचन अभिरामा – नेत्रों को आनंद देने वाले

तनु घनस्यामा – मेघ के समान श्याम शरीर

निज आयुध भुजचारी – चारों भुजाओं में शस्त्र (आयुध) धारण किए हुए थे

भूषन – दिव्य आभूषण और

बनमाला – वनमाला पहने हुए थे,

नयन बिसाला – बड़े–बड़े नेत्र थे,

सोभासिंधु – इस प्रकार शोभा के समुद्र तथा

खरारी – खर राक्षस को मारने वाले भगवान प्रकट हुए।

कैसा है यह स्वरूप, तुलसीदासजी कहते हैं कि सुंदर नेत्र है, मेघसा श्याम शरीर है, चारों भुजाओं में अपने चारों शस्त्र (शंख, चक्र, गदा, पद्म) धरे है।

वनमाला पहने हैं, सब अंगों में आभूषण सजे है, बड़े विशाल नेत्र है, शोभा के सागर और खर नाम राक्षस के बैरी है।

कह दुइ कर जोरी, अस्तुति तोरी,

केहि बिधि करूं अनंता।

माया गुन ग्यानातीत अमाना,

वेद पुरान भनंता॥

कह दुइ कर जोरी – दोनों हाथ जोड़कर माता कहने लगी

अस्तुति तोरी – तुम्हारी स्तुति

केहि बिधि करूं – मैं किस प्रकार करूँ

अनंता – हे अनंत!

माया गुन ग्यानातीत अमाना – माया, गुण और ज्ञान से परे

वेद पुरान भनंता – वेद और पुराण तुम को बतलाते हैं (वेद और पुराण तुम को माया, गुण और ज्ञान से परे बतलाते हैं)

दोनों हाथ जोड़ कौशल्या ने कहा कि हे अनंत प्रभु, मैं आप की स्तुति कैसे करू।

क्योंकि वेद और पुराण भी ऐसे कहते हैं कि प्रभु का स्वरूप माया के गुणों से परे, इंद्रियजन्य ज्ञान से अगोचर और प्रमाण का विषय नहीं है।

करुना सुख सागर, सब गुन आगर,

जेहि गावहिं श्रुति संता।

सो मम हित लागी, जन अनुरागी,

भयउ प्रगट श्रीकंता॥

करुना सुख सागर – दया और सुख का समुद्र,

सब गुन आगर – सब गुणों का धाम कहकर

जेहि गावहिं श्रुति संता – श्रुतियाँ और संतजन जिनका गान करते हैं

सो मम हित लागी – मेरे कल्याण के लिए

जन अनुरागी – वही भक्तों पर प्रेम करने वाले

भयउ प्रगट श्रीकंता – लक्ष्मीपति भगवान प्रकट हुए हैं

सो हे प्रभु मैं तो ऐसे जानती हूँ कि जिसे श्रुति और संत लोग गाते हैं, वे करुणा व सुखके सागर, सब गुणों के आगर (भण्डार), भक्त अनुरागी, लक्ष्मीपति, प्रभु मेरा हित करने के लिए प्रकट हुए है।

ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया,

रोम रोम प्रति बेद कहै।

मम उर सो बासी, यह उपहासी,

सुनत धीर मति थिर न रहै॥

ब्रह्मांड निकाया – अनेकों ब्रह्माण्डों के समूह हैं

निर्मित माया – माया के रचे हुए

रोम रोम – आपके रोम–रोम में रहते हैं

प्रति बेद कहै – ऐसा वेद कहते हैं

मम उर सो बासी – वे तुम मेरे गर्भ में रहे

यह उपहासी – इस हँसी की बात

सुनत धीर – सुनने पर धीर (विवेकी) पुरुषों की बुद्धि भी

मति थिर न रहै – स्थिर नहीं रहती (विचलित हो जाती है)

और हे प्रभु, वेद ऐसे कहते हैं कि आपके रोम–रोम में माया से रचे हुए अनेक ब्रह्मांड समूह रहते हैं सो वे आप मेरे उदर (गर्भ) में कैसे रहे। इस बात की मुझे बड़ी हंसी आती है। केवल मैं ही नहीं बड़े–बड़े धीर पुरुषों की बुद्धि भी यह बात सुनकर धीर नहीं रहती।

उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसुकाना,

चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।

कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई,

जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥

उपजा जब ग्याना – जब माता को ज्ञान उत्पन्न हुआ

प्रभु मुसुकाना – तब प्रभु मुस्कुराए

चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै – वे बहुत प्रकार के चरित्र करना चाहते हैं

कहि कथा सुहाई – अतः उन्होंने (पूर्व जन्म की) सुंदर कथा कहकर

मातु बुझाई – माता को समझाया

जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै – जिससे उन्हें पुत्र का प्रेम प्राप्त हो और भगवान के प्रति पुत्र का भाव आ जाए

जब कौशल्या को ज्ञान प्राप्त हो गया तब प्रभु हँसे कि देखो इसको किस वक्त में ज्ञान प्राप्त हुआ है अभी इसको ज्ञान नहीं होना चाहिए। क्योंकि, अभी मुझको बहुत चरित्र करने हैं। उस वक्त प्रभु अनेक प्रकार के चरित्र करना चाहते थे, इसलिए माता को अनेक प्रकार की कथा सुना कर ऐसे समझा बुझा दिया कि जिस तरह उसके मन में पुत्र का प्रेम आ गया।

माता पुनि बोली, सो मति डोली,

तजहु तात यह रूपा।

कीजै सिसुलीला, अति प्रियसीला,

यह सुख परम अनूपा॥

माता पुनि बोली, सो मति डोली – प्रभु की प्रेरणा से कौशल्या माँ की बुद्धि दूसरी ओर डोल गई, तब वह फिर बोली

तजहु तात यह रूपा – हे तात! यह रूप छोड़कर

कीजै सिसुलीला – बाललीला करो

अति प्रियसीला – जो मेरे लिए अत्यन्त प्रिय है

यह सुख परम अनूपा – यह सुख मेरे लिए परम अनुपम होगा

प्रभु की प्रेरणा से कौशल्या की बुद्धि दूसरी ओर डोल गई जिससे वह फिर बोली कि हे तात! आप यह स्वरूप तज (छोड़) दो।

बालक स्वरूप धारण कर, अतिशय प्रिय स्वभाव वाली बाल लीला करो। यह सुख मुझको बहुत अच्छा लगता है।

सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना,

होइ बालक सुरभूपा।

यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं,

ते न परहिं भवकूपा॥

सुनि बचन सुजाना – माता के ऐसे वचन सुनकर

रोदन ठाना – (भगवान ने बालक रूप धारण कर) रोना शुरू कर दिया

होइ बालक – बालक रूप धारण कर

सुरभूपा – देवताओं के स्वामी भगवान ने

यह चरित जे गावहिं – जो इस चरित्र का गान करते हैं

हरिपद पावहिं – वे श्री हरि का पद (भगवत पद) पाते हैं

ते न परहिं – और वे फिर नहीं गिरते

भवकूपा – संसार रूपी कुएं में (और फिर संसार रूपी माया में नहीं गिरते)

माता के ऐसे वचन सुन प्रभु ने बालक स्वरूप धारण कर रुदन करना (रोना) शुरू किया। महादेव जी कहते हैं कि हे पार्वती जो मनुष्य इस चरित्र को गाते हैं वह मनुष्य अवश्य भगवत पद को प्राप्त हो जाते हैं और वे कभी संसार रुपी कुए में नहीं गिरते।

91

जय माता की

चरण भले हैं भोली मां

मैया भवना वाली मेंहरा वाली है
मैया भवना वाली मेंहरा वाली है
मैया दिल्ली वाली भोली भाली है
माता सीता जी.......कह दो हनुमान से ....
थोड़ी राम जी की भक्ति का प्रसाद दे दो
संकट पड़े तो हनुमान को बुलाऊं
अपने मन पावन शक्ति जगाऊं
चरण भले हैं भोली मां – माई तुमरे चरण भले

जय जय मां – अम्बा तुमरे चरण भले

भोली अम्मा – अम्मा तुमरे चरण भले

भोले बाबा – बाबा तुमरे चरण भले

इन चरणों को मैं क्या शोभा वरनू

इन चरणों की मैं क्या छवि वरनू

ये तो मेंहदी से लाल रचे – माई तेरे चरण भले

इन चरणों की मैं क्या महिमा वरनू

इन चरणों का मैं क्या यश वरनू

सुर मुनि ध्यान धरे – माई तेरे चरण भले

इन चरणों विच कलियाँ सोहे

कलियाँ भी सोहे मानक छड़ियाँ सोहे

हीरे मोती रतन जड़े – माई तेरे चरण भले

इन चरणों पे बलि बलि जाऐं
मैया चरण कमल रज पाऐ
बाबा चरण कमल रज पाऐ
चरण रज पाऐं ताप मिटाऐ
मैया बाबा की चरणी पड़े – माई तेरे चरण भले